

हार तो हर कोई मान लेता है, ये सबसे आसान तरीका है, जीतता वही है जो अंत तक लड़ता है।

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 180, नई दिल्ली, रविवार 07 सितम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :-
F.2 (P-2) Press/2023

03 भारत-फ्रांस-डेनमार्क में एक्सएलआरआई की बहु-देशीय शैक्षणिक साझेदारी

06 खेलने के लिए कितनी आजाद है भारत की लड़कियां

08 हड़ प्रभावितों के पुनर्वास में आगे आई संस्थाएं

त्योहारों पर दिल्ली सरकार का बड़ा ऐलान: रामलीला समितियों और दुर्गा पंडालों को मिलेगी 1200 यूनिट फ्री बिजली



परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने आज राजधानी के त्योहारों को लेकर बड़ा ऐलान किया। उन्होंने कहा कि जिस तरह कांवड़ कैंपों में दिल्ली सरकार की ओर से समितियों को सहायता दी गई थी, उसी तर्ज पर अब सभी रामलीला समितियों को भी 1200 यूनिट मुफ्त बिजली उपहार के रूप में दी जाएगी। इस बिजली के कनेक्शन के लिए मीटर

के सिर्फ 25% ही शुल्क देना होगा। साथ ही, सफाई, सुरक्षा, फायर ब्रिगेड और स्वास्थ्य विभाग की भी टीमें उपस्थित रहेंगी, पर्याप्त व्यवस्था होगी, रोजाना फॉर्निंग भी होगी, सभी NOC सिंगल विंडो से मिलेंगी, जिससे आयोजकों को कहीं भटकना ना पड़े और किसी भी परेशानी का सामना ना करना पड़े। मुख्यमंत्री ने बताया कि यह सुविधा सिर्फ रामलीला समितियों तक सीमित नहीं रहेगी

बल्कि दिल्ली के सभी दुर्गा पंडालों के लिए भी लागू होगी। उन्होंने कहा, "हमने एक समिति का गठन किया है, जो किसी भी प्रकार की समस्या आने पर तुरंत हमें सूचित करेगी। इस बार दिल्ली की दीवाली बेहतरीन होगी।" मुख्यमंत्री ने कहा पीएम मोदी जी की जीएसटी स्कीम के कारण और हमारी दिल्ली सरकार की इस सहायता से दिल्ली में प्रभु रामजी के आगमन की भरपूर तैयारियां की

जाएंगी। प्रभु राम के इस त्यौहार से दिल्ली की रोशनी और भी जगमग हो होगी त्योहारों के दौरान बिजली के खर्च से समितियों को राहत देने के इस कदम को धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों के आयोजकों ने सराहा है। सरकार का मानना है कि इससे राजधानी में उत्सव का माहौल और ज्यादा भव्य व सुरक्षित बनेगा।

“राष्ट्रव्यापी इस्पात संयंत्रों में परिवहन माफियाओं का कब्जा – स्थानीय ट्रांसपोर्टर्स की आजीविका पर संकट, आर्थिक अनिश्चितता और भय का माहौल”



उपतत्सा राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) राष्ट्रीय अध्यक्ष: डॉ. राजकुमार यादव

पटना। “उपतत्सा” राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी), जो देशभर के ट्रक ट्रांसपोर्टर्स और सारथियों की आवाज है, आज राष्ट्रीय स्तर पर इस्पात संयंत्रों में व्याप्त परिवहन माफियाओं के खिलाफ कड़ा रुख अपनाने को मजबूर है। ये माफिया न केवल स्थानीय ट्रांसपोर्ट व्यवसायियों की आजीविका छीन रहे हैं, बल्कि पूरे क्षेत्र में भय और अनिश्चितता का वातावरण पैदा कर रहे हैं। विशेष रूप से राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) में अंदरूनी गठबंधन के जरिए निकास सामग्री (स्कैप, एमएस सीट, एमएस कोइल, पिग आयरन व अन्य स्टील उत्पाद आदि) पर एकल माफिया का कब्जा स्थानीय बाजार को बुरी तरह अस्थिर कर रहा है। हमारी मांग है कि केंद्र और राज्य सरकारें तत्काल जांच कराएँ, माफियाओं को उखाड़ फेंकें और ईमानदार ट्रांसपोर्टर्स को न्याय दिलाएँ। यह मुद्दा न केवल आर्थिक है, बल्कि लाखों परिवारों की भावनात्मक पीड़ा से जुड़ा है, जहाँ मेहनतकश गाड़ी मालिक, ट्रेडर्स, व्यापारी व ट्रांसपोर्टर्स डर के साए में जीने को मजबूर हैं। समस्या का विवरण के तहत भारत के इस्पात उद्योग, जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का एक मजबूत स्तंभ है, परिवहन माफियाओं की गिरफ्त में फँस चुका है। ये माफिया यूनियनों और संयंत्र अधिकारियों के साथ मिलकर निकास सामग्री (जैसे स्कैप मेटल, तैयार स्टील) को दुलाई में एक्सपोर्टेशन, चोरी और जबरन ठेकेदारों को आसानी से देकर निकास कर रहे हैं। इससे स्थानीय ट्रांसपोर्टर्स को काम नहीं मिलता, बाजार अनिश्चित हो जाता है और भय का माहौल बनता है। बाहरी राज्यों के ट्रक मालिकों को धमकियाँ मिलती हैं, उनके वाहनों को नुकसान पहुँचाया जाता है जिससे राष्ट्र भर में गलत संदेश जाता है। यह सिफ्टिकेट एक ट्रांसपोर्ट के नाम पर सामग्री को दुलाई पर एकाधिकार कायम कर 200 ₹ से 300 ₹ की अधिक उगाही प्रति टन के हिसाब कर लेते हैं, जो महीने के करोड़ों होते हैं, जबकी स्थानीय बाजार में 400 से 500 पुराने व मेहनतकश ट्रांसपोर्टर्स से इस व्यवसाय के भरोसे बैठे हैं उन्हें ईमानदारी व मेहनत के 50 ₹ प्रति टन भी नसीब नहीं होता। इस तरह के माफिया इन्हीं पैसों के दम पर संलग्न सिफ्टिकेट के सँग गोवा जैसे अन्य रमनिक स्थानों में भ्रमण कर महँगे आयोजन का लुफ्त उठाते हैं। यह स्थिति न केवल आर्थिक नुकसान पहुँचाती है, बल्कि मेहनतकशों की भावनात्मक दुनिया को तोड़ती है – जहाँ एक ट्रांसपोर्टर रात-दिन मेहनत करता है, लेकिन माफिया के कारण उसकी कमाई छिन जाती है।

तथ्यात्मक उदाहरण-राउरकेला इस्पात संयंत्र (ओडिशा): यहाँ माफियाओं का अंदरूनी गठबंधन निकास सामग्री पर कब्जा जमाएँ हुए है। 2019 में, आरएसपी से मिनरल्स की चोरी के मामले में सीआईएसएफ ने चार कर्मचारियों को सस्पेंड किया था, जो माफिया की मिलीभगत का संकेत है। स्थानीय ट्रांसपोर्टर्स को काम से वंचित रखा जाता है, जबकि माफिया-समर्थित ठेकेदारों को प्राथमिकता मिलती है। इससे बाजार में अनिश्चितता फैलती है और ट्रक मालिकों में भय व्याप्त है – कई मामलों में धमकियाँ और हिंसा की घटनाएँ सामने आई हैं। 2020 में, राउरकेला क्षेत्र में स्टील ट्रेडिंग ग्रुप पर आई-टी छापे पड़े, जो संगठित चोरी का प्रमाण है। चाहे वह एक्सपोर्ट निकासी हो, ट्रेडर प्रकरण हो या अन्य चोरी के मामले इन सभी में इन सिफ्टिकेट्स को

जोड़कर देखा जाये व कार्रवाई की अनुसंसा हो। वर्तमान में भी एक्सपोर्ट निकासी कई रूप में जारी है जिसपर रोक लगाने की आवश्यकता है।

अन्य प्रमुख उदाहरण: जेएसडब्ल्यू स्टील प्लांट (महाराष्ट्र): यहाँ टीएमटी स्टील की दुलाई में ऐसे ट्रांसपोर्टर्स और चोरों की मिलीभगत से प्रतिदिन 100 टन तक चोरी हो रही है, जिसकी कीमत ₹30 लाख से अधिक है। जीपीएस ट्रैकिंग से पता चलता है कि ट्रक डिलीवरी पॉइंट की बजाय चोरी के गिरोहों के पास जाते हैं। इससे स्थानीय ट्रांसपोर्टर्स को नुकसान होता है और भय का माहौल बनता है।

कोल इंडस्ट्री (झारखंड, जो स्टील से जुड़ी): कोल माफिया (जैसे सिंह मैनेशन गैंग) यूनियनों और ट्रांसपोर्टर्स को कंट्रोल करता है। कोल इंडिया की 5-50% उत्पादन चोरी हो जाती है, जिसमें स्टील प्लांट्स के लिए कोल शामिल है। एक्सपोर्टेशन और रगून टैक्सर से ट्रांसपोर्टर्स पीड़ित हैं।

मुंबई क्षेत्र: कंस्ट्रक्शन कंपनियाँ स्टील थैप्ट माफिया से करोड़ों का नुकसान झेल रही हैं। माफियाओं की मिलीभगत से स्टील चोरी होती है, जो स्टील प्लांट्स से आने वाली सप्लाई को प्रभावित करती है।

तुलनात्मक विश्लेषण: राउरकेला में माफिया का एकाधिकार अन्य संयंत्रों से अधिक गंभीर है, जहाँ यूनियनों के बल पर परिवहन को कब्जे में ले लिया गया है। उदाहरणस्वरूप, भिलाई स्टील प्लांट (छत्तीसगढ़) में यूनियन कंट्रोल है, लेकिन चोरी का पैमाना राउरकेला जैसा नहीं है। माफियाओं की मिलीभगत से स्टील चोरी होती है, जो स्टील प्लांट्स से आने वाली सप्लाई को प्रभावित करती है।

हमारी मांगें - केंद्र और राज्य सरकारें राष्ट्रव्यापी जांच समिति गठित करें, जिसमें राउरकेला समेत सभी सरकारी अधिकृत संयंत्रों में परिवहन माफियाओं की जांच हो।

माफिया-समर्थित यूनियनों और ठेकेदारों पर प्रतिबंध लगाया जाए उनके सम्पत्ति वृद्धि की उच्च स्तरीय ऑडिट हो जिससे ओर बाते खुलकर बाहर आने की प्रबल संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता तथा स्थानीय ट्रांसपोर्टर्स को निष्पक्ष अवसर दिए जाएँ।

जीपीएस ट्रैकिंग और डिजिटल कंट्रोल का मजबूत कर चोरी रोकी जाए, तथा दोषि परिवहन माफियाओं पर मकोका जैसे कड़े कानून लागू किए जाएँ।

ट्रांसपोर्टर्स की सुरक्षा के लिए विशेष टास्क फोर्स बनाई जाए, ताकि भय का माहौल खत्म हो और परिवार सुरक्षित महसूस करें।

उपतत्सा राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा इस अन्याय के खिलाफ जन आंदोलन चलाएगा और आवश्यकता पड़ने पर कानूनी लड़ाई लड़ेगा। हम सभी ट्रांसपोर्टर्स से अपील करते हैं कि एकजुट हों और इस माफिया राज को उखाड़ फेंकें। यह लड़ाई न केवल आर्थिक न्याय की है, बल्कि उन लाखों परिवारों की भावनाओं को है जो डर और अनिश्चितता में जी रहे हैं।

देशभर में एयरपोर्ट्स के समीप अवैध बहुमंजिला इमारतों का निर्माण – उड़ान सुरक्षा पर खतरा, निवेशकों के धन पर प्रश्नचिन्ह और स्थानीय प्रशासन की मिलीभगत पर सवाल

राउरकेला एयरपोर्ट के नजदीक बने हाइराइस बिल्डिंग में निवेशकों के पैसे पर खड़े हुए सवाल



शुरू करने से पहले AAI से ऊँचाई मंजूरी (हाइट क्लियरेंस एनओसी) लेना अनिवार्य है। यह नियम विमान नैविगेशन और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए लागू किया गया है। उदाहरण के लिए, नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट (जेवर) के 20 किलोमीटर के दायरे में बिना एनओसी के निर्माण पर सख्त कार्रवाई की चेतावनी दी गई है, जिसमें बुलडोजर से अवैध निर्माण ध्वस्त करना शामिल है।

कोलकाता हवाई अड्डे के आसपास G+8 (आठ मंजिल से ऊँची) इमारतों के निर्माण पर रोक लगाई गई है, खासकर अहमदाबाद में एक विमान हादसे के बाद।

लखनऊ हवाई अड्डे के आसपास भी अवैध निर्माण पर निगरानी बढ़ाई गई है, और बिना एनओसी के निर्माण को ध्वस्त करने की चेतावनी दी गई है। ऐसी स्थिति में राउरकेला एयरपोर्ट के नजदीक नवनिर्मित या निर्माणाधीन हाई राइज बिल्डिंग को जांच के दायरे में लिए जाने की आवश्यकता है व जरूरी परमिशन की कॉपीयां खंगालने की आवश्यकता है जिससे मध्यम श्रेणी निवेदक इस तरह की बिल्डिंगों में पैसे लगाकर अनिश्चित के झूले में झूलने को मजबूर ना हो स्थानीय प्रशासन समय रहते उनके निवेश की सुरक्षा को सुनिश्चित करें। सीपी प्रदेश अध्यक्ष डॉ राजकुमार यादव के अनुसार सिर्फ छेड़ ही नहीं बल्कि पानपोशा, डांडिया पाली, सिविल टाउनशिप, जगदा में भी सभी हाईराइज आटालिकाओं के प्रति जरूरी व जारी दिशा निर्देशों को खंगाल जाए जिससे इनमें निवेश करने वाले ग्राहकों को बाद में किसी परेशानी का सामना ना करना पड़े।

उपतत्सा राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) राष्ट्रीय अध्यक्ष: डॉ. राजकुमार यादव

उपतत्सा राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी, जो देश के ट्रक ट्रांसपोर्टर्स और सारथियों के हितों की रक्षा करने वाला प्रमुख संगठन है, सम्पूर्ण राष्ट्र में एयरपोर्ट्स के आसपास हो रहे अवैध निर्माणों पर गंभीर चिंता व्यक्त करता है। यह मुद्दा न केवल राष्ट्रीय उड़ान सुरक्षा को खतरे में डाल रहा है, बल्कि स्थानीय प्रशासन की मिलीभगत को भी उजागर करता है। हमारी मांग है कि केंद्र सरकार और संबंधित प्राधिकरण तत्काल कार्रवाई करें, अवैध संरचनाओं को ध्वस्त करें और जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ भी कार्रवाई के तहत सख्त कदम उठाएँ।

समस्या का विवरण-भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (AAI) और नागरिक उड्डयन मंत्रालय के नियमों के अनुसार, एयरपोर्ट्स के 20 किलोमीटर के दायरे में कोई भी निर्माण बिना नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट (NOC) के नहीं किया जा सकता। ऊँची इमारतें विमान नैविगेशन, लैंडिंग और टेकऑफ में बाधा बन सकती हैं, जो हादसों का कारण बन सकती हैं। हाल ही में, जून 2025 में एयर इंडिया की दुर्घटना के बाद जारी किए गए एयरक्राफ्ट (डेमोलिशन ऑफ ऑब्जेक्शन) रूल्स, 2025 के तहत, ऊँचाई सीमा का उल्लंघन करने वाली संरचनाओं को 60 दिनों के भीतर ध्वस्त करने का प्रावधान है। फिर भी, देशभर में सैकड़ों अवैध बहुमंजिला इमारतें खड़ी हो रही हैं, जो स्थानीय प्रशासन की मौन सहमति या मिलीभगत को दर्शाती हैं। ये निर्माण न केवल सुरक्षा नियमों का उल्लंघन हैं, बल्कि निवेशकों को धोखा देकर उनके पैसे को जोखिम में डालते हैं, क्योंकि ऐसे प्रोजेक्ट्स को कभी भी ध्वस्त किया जा सकता है।

तथ्यात्मक उदाहरण-राउरकेला (ओडिशा): राउरकेला एयरपोर्ट के समीप छेड़ कॉलोनी, पानपोसा, दांडियापाली और सिविल टाउन क्षेत्रों में बहुमंजिला इमारतों का निर्माण एयरपोर्ट नियमावली का स्पष्ट उल्लंघन है। इन क्षेत्रों में NOC के बिना ऊँची संरचनाएँ खड़ी की जा रही हैं, जो उड़ान पथ में बाधा उत्पन्न कर सकती हैं वहाँ एयरपोर्ट के समुचित विकास हेतु जरूरी नियमावली में बाधा उत्पन्न कर सकती हैं। स्थानीय प्रशासन की चुप्पी से सवाल उठता है कि क्या यह मिलीभगत का परिणाम है? निवेशक इन इमारतों में लाखों रुपये लगा रहे हैं, लेकिन भविष्य में ध्वस्तकरण की स्थिति में उनका

नुकसान अपूरणीय होगा। अन्य प्रमुख उदाहरण-नागपुर: डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर इंटरनेशनल एयरपोर्ट के पास 181 इमारतें ऊँचाई नियमों का उल्लंघन कर रही हैं, जो उड़ान सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा हैं। भुवनेश्वर: जगमारा क्षेत्र में एक अधिकृत दो-मंजिला मार्केट कॉम्प्लेक्स, जो बिजु पटनायक इंटरनेशनल एयरपोर्ट के उड़ान पथ पर है, अभी तक ध्वस्त नहीं किया गया है। मुंबई: एयरपोर्ट के समीप सात संरचनाओं के हिस्सों को ऊँचाई उल्लंघन के कारण हटाना गया, और महाराष्ट्र सरकार ने हाईकोर्ट को आशवासन दिया कि कार्रवाई जारी रहेगी।

कोलकाता: एयरपोर्ट के 20 किलोमीटर दायरे में G+8 से ऊँची इमारतों पर प्रतिबंध लगा है, लेकिन 700 से अधिक इमारतें नियमों का उल्लंघन कर रही हैं। लखनऊ: एयरपोर्ट के पास सात अवैध रूफटॉप संरचनाएँ ध्वस्त की गईं, साथ ही नो-कंस्ट्रक्शन जोन में मोबाइल टावर और अन्य निर्माण पाए गए। नोएडा (जेवर एयरपोर्ट): 10 किलोमीटर दायरे में अवैध निर्माणों पर प्रतिबंध है, और बिना NOC के प्रोजेक्ट्स को चेतावनी दी गई है।

ये उदाहरण दर्शाते हैं कि समस्या देशव्यापी है। स्थानीय प्रशासन की निष्क्रियता से निवेशक धोखे का शिकार हो रहे हैं, जबकि राष्ट्रीय सुरक्षा दांव पर लगी है। हमारी मांगें: केंद्र सरकार तत्काल एक राष्ट्रीय जांच समिति गठित करे और सभी एयरपोर्ट्स के 20 किलोमीटर दायरे में अवैध निर्माणों की जांच कराए।

राउरकेला सहित सभी उल्लिखित क्षेत्रों में NOC उल्लंघनों की जांच हो और दोषी बिल्डरों के साथ ही साथ संलग्न अधिकारियों पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाए। निवेशकों के हितों की रक्षा के लिए अवैध प्रोजेक्ट्स में लगे धन को वापसी सुनिश्चित की जाए। नए नियमों का सख्ती से पालन कराया जाए, और बुलडोजर कार्रवाई के माध्यम से अवैध संरचनाओं को ध्वस्त किया जाए।

उपतत्सा राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा इस मुद्दे पर जन जागरूकता अभियान चलाएगा और आवश्यकता पड़ने पर कानूनी कार्रवाई करेगा। हम सभी नागरिकों, ट्रांसपोर्टर्स और निवेशकों से अपील करते हैं कि वे सभी इस मुद्दे पर एकजुट हों।

टैपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत के सदस्य बनने के लिए नीचे दिए गए गूगल फॉर्म पर क्लिक करें और भरकर जमा करें, फिजी कुंडू, महासचिव टोल्वा ट्रस्ट (पंजीकृत अंडर सेक्शन 60), नीति आयोग भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त, एमएसएमई में पंजीकृत <https://forms.gle/VEThcFgMcknGFc1u9>

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND SOCIAL WELFARE ALLIED TRUST REGD.

MEMBERSHIP FORM FOR TOLWA TRUST

Name, email, and photo associated with your Google account will be recorded when you upload, fill and submit this form.

* Indicates required question

How you got aware about TOLWA trust *

Social Media

News Paper

Personal connection

Youtube

Social Function/ RTO/friends/family

रजिस्टर्ड अंडर सेक्शन 60 बिद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम - डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए - 4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063

कॉर्पोरेट कार्यालय :- 529, रामयापुर, मैन बयाना रोड, नियर बैंक ऑफ बड़ौदा दिल्ली 110042

टैपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in

Email : tolwadelhi@gmail.com bathlajanayathalia@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सेक्शन 60 बिद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम - डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए - 4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063

कॉर्पोरेट कार्यालय :- 529, रामयापुर, मैन बयाना रोड, नियर बैंक ऑफ बड़ौदा दिल्ली 110042

BHARAT MAHA EV RALLY

GREEN MOBILITY AMBASSADOR

Print Media - Delhi

500+ Universities, 2500+ Institutions, 23 RTI

28 States, 9 Union Territories, 365 Ministries

21000+KM, 100 Days Travel

1 Cr. Tree Plantation

Sanjay Batla

8 SEP 2025

INDIA

91-9811011439, +91-9650933334

www.fevaev.com

info@fevaev.com

।। भगवान शिव का नमस्कार मंत्र ।।



कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो नमो नमनाय नमः ।।

प्रभो ! आप ही वामदेव, ज्येष्ठ, श्रेष्ठ रुद्र, काल, कलविकरण, बलविकरण, बल, बलप्रमथन, सर्वभूतदमन तथा मनोमन आदि नामों से प्रतिपादित होते हैं, इन सभी नाम-रूपों में आपके लिये मेरा बारम्बार नमस्कार है।

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ।।

भवे भवे नातिभवे भवस्व भवोद्भवनाय नमः ।। मैं सद्योजात शिव- की शरण लेता हूँ। सद्योजात को मेरा नमस्कार है। किसी जन्म या जगत में मेरा अतिभव-पराभव न करे। आप भवोद्भव को मेरा नमस्कार है। नमः स्यात् नमः प्रातरं नमो रात्र्या नमो दिवा ।। भवाय च शर्वाय चोभाभ्यामकरं नमः ।। हे रुद्र ! आपको सायंकाल, प्रातःकाल, रात्रि और दिन में भी नमस्कार है। मैं भवदेव तथा रुद्रदेव दोनों को नमस्कार करता हूँ।

यस्य निःश्वसितं वेदा वो वेदेभ्योऽखिलं जगत ।। निर्ममे तमहं वन्दे विद्यातीर्थं महेश्वरम् ।। वेद जिनके निःश्वस हैं, जिन्होंने वेदों से सारी सृष्टि की रचना की और जो विद्याओं के तीर्थ हैं, ऐसे शिव की मैं वन्दना करता हूँ। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।। तीन नेत्रोंवाले, सुगन्धयुक्त एवं पुष्टि के वर्धक शंकर का हम पूजन करते हैं, वे शंकर हमको दुःखों से ऐसे छुड़ायें जैसे खरबूजा पककर बन्धन से अपने-आप छूट जाता है, किंतु वे शंकर हमें मोक्ष से न छुड़ायें। सर्वो वै रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु ।। पुरुषो वै रुद्रः सन्महो नमो नमः ।। विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बहुधा जातं जायमानं च यत् ।। सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु ।। जो रुद्र उमापति हैं वही सब शरीरों में जीवरूप से प्रविष्ट हैं, उनके निमित्त हमारा प्रणाम हो। प्रसिद्ध एक अद्वितीय रुद्र ही पुरुष हैं, वह ब्रह्मलोक में ब्रह्मरूप से, प्रजापतिलोक में प्रजापतिरूप से, सूर्यमण्डल में वैराटरूप से तथा देह में जीवरूप से स्थित हुआ है; उस महा-सच्चिदानन्दस्वरूप रुद्र को बारम्बार प्रणाम हो। समस्त चराचरतमक जगत् जो विद्यमान है, हो गया है तथा होगा, वह सब प्रपंच रुद्र की सत्ता से भिन्न नहीं हो सकता, यह सब कुछ रुद्र ही है, इस रुद्र के प्रति प्रणाम हो।

जिस समय से हमारा मन दूसरों के लिए शुभ देखना प्रारंभ कर देता है, शांति उसी समय से हमारे जीवन में प्रविष्ट हो जाती है।

आश्चर्य है कि यह बहुत अद्भुत खेल है उस परमात्मा का जिसे लिखाता भी वही है, मिटाता भी वही है। भटकाता है वही, तो राह दिखाता भी वही है। उलझाता भी वही है सुलझाता भी वही है। जिंदगी को मुश्किल घड़ी में दिखता भी नहीं, मगर साथ देता भी वही है। उसकी लीला विचित्र है, हर कोई जान नहीं पाता। जब तक हम अभिनय करता हैं, स्टैज पर ही एक्ट कर रहे हैं तब तक पूरी वस्तुस्थिति/घटना समझ नहीं आती इसलिए हमारे मनीषियों ने सुबह-शाम थोड़ा-थोड़ा समय अपने साथ रहकर दर्शक की भांति जीवन को देखने की कला को निखारने के लिए कहा है। सारा जीवन हमने केवल स्टैज/रंगमंच पर नाटक/एक्ट करते ही गुजार दी। हम इस रंगमंच के फिल्मांकन को दर्शक की भांति देखेंगे कब ? जब तक दर्शक/साक्षी की भांति देखने के लिए हम अभ्यस्त न हो जायें तब तक यह संसार/परमात्म/अस्तित्व के साथ-साथ अपने जीवन और जीवन के कृत्यों को भी देखने में हम सक्षम नहीं हो पायेंगे।

'सफल जीवन' क्या होता है ?

पिता, बेटे को पतंग उड़ाने ले गए। बेटा पिता को ध्यान से पतंग उड़ाते देख रहा था थोड़ी देर बाद बेटा बोला पापा इस धागे की वजह से पतंग अपनी आजादी से और ऊपर की ओर नहीं जा पा रही है, क्या हम इसे तोड़ दें !! यह और ऊपर चली जाएगी।

पिता ने धागा तोड़ दिया *.. पतंग थोड़ा सा और ऊपर गई और उसके बाद लहरा कर नीचे आयी और दूर अनजान जगह पर जा कर गिर गई. तब पिता ने बेटे को जीवन का दर्शन समझाया.

बेटा 'जिंदगी में हम जिस ऊंचाई पर हैं हमें अक्षर लगाता की कुछ चीजें, जिनसे हम बंधे हैं वे हमें और ऊपर जाने से रोक रही हैं जैसे:

1. घर
2. परिवार-
3. अनुशासन-
4. माता-पिता-
5. गुरू-और-
6. समाज-

और हम उनसे आजाद होना चाहते हैं, वास्तव में यही वो धागे होते हैं जो हमें उस ऊंचाई पर रचना के रखते हैं। 'इन धागों के बिना हम एक बार तो ऊपर जायेंगे परन्तु बाद में हमारा वो ही हथ ह्रोगा जो बिना धागे की पतंग का हुआ.' 'अतः जीवन में यदि तुम ऊंचाई पर बने रहना चाहते हो तो, कभी भी इन धागों से रिश्ता मत तोड़ना..'' 'धागे और पतंग जैसे जुड़ाव के सफल संतुलन से मिली हुई ऊंचाई को ही 'सफल जीवन' कहते हैं."

भेद-भाव क्यों है अगर परमात्मा से प्रेम है ?

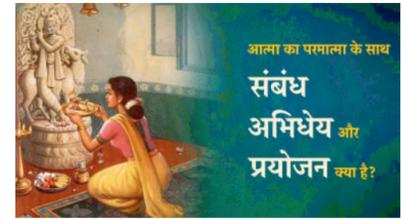
जीवन एक -अंगी नहीं है जैसे कि हमारा शरीर। शरीर बनता है कई अंगों से। ऐसे ही हमारा समाज, देश और विश्व बनता है। कुछ नादान लोग सोचते हैं कि संसार में बस उनका ही देश, प्रांत, भाषा, कल्चर, धर्म या संप्रदाय ही सबसे बड़िया है, नंबर एक है। बाकी सब दो नंबर या जीरो नंबर है। यह एक अहंकार है जो बचपन से ही लोगों के दिमाग में भरना शुरू कर दिया जाता है।

भाषा के अहंकार की बात करें तो कुछ लोग कहते हैं कि भारत में सिर्फ हिंदी भाषा हो, अंग्रेजी ना हो क्योंकि यह अंग्रेजों ने दी है; लेकिन उन्हें यह नहीं पता कि भारत बहुत बड़ा देश है, यहां बहुत से प्रांत हैं। जो बात हिंदी - भाषी कहते हैं कि बस हिंदी ही हो वही बात तमिल बोलने वाले भी कहते हैं कि सब जगह सिर्फ तमिल ही हो, बंगाली लोग कहते हैं कि सब जगह सिर्फ कन्नड़ ही हो, मराठी बोलने वाले कहते हैं सब तरफ बस मराठी ही हो।

सिर्फ गुजरातियों में सबसे कम अहंकार है अपनी गुजराती भाषा को लेकर इसलिए गुजराती लोग भारत में सबसे ज्यादा सफल हैं।

दुनिया में नफरत है तो इसका कारण राजनीतिज्ञ और धर्मगुरु हैं जिनकी नीति है कि र लोगों को बांटो, फूट डालो और राज करो; अगर बांटेंगे तो फूट डाल पाओगे और तभी राज कर पाओगे, तभी इनका शोषण कर पाओगे;

इसलिए जात के नाम पे, धर्म के नाम पे, देश के नाम पे, प्रांत के नाम पे, भाषा के नाम पे, -बांटो, फूट डालो और राज करो। परमात्मा ने ही सारी दुनियां बनाई है और वह इसलिए सुंदर है क्योंकि इसमें तरह-तरह के फूल हैं, पक्षी हैं, कल्चर हैं, पहाड़ हैं, जलवायु है, रंग है, भाषाएं हैं, लोग हैं। इसलिए हमें इस बात को समझते हुए अहंकार से बचना चाहिए और यदि हम परमात्मा से सच में प्रेम करते हैं तो उसकी बनाई प्रत्येक चीज से भी प्रेम करना चाहिए।



आत्मा का परमात्मा के साथ

संबंध अभिधेय और प्रयोजन क्या है ?

सुचिन्द्रम मंदिर, कन्याकुमारी, तमिलनाडु



इस मंदिर में एक लाख नक्काशित मूर्तिया हैं ? 9वीं शताब्दी में बने 1 लाख मूर्तियों की नक्काशी वाले इस मंदिर (सुचिन्द्रम मंदिर, कन्याकुमारी, तमिलनाडु) में म्यूजिकल पिलस हैं जो संगीत के अलग-अलग सुरों को उत्पन्न करते हैं।

हैन अद्भुत ! *भारतवर्ष केवल ताजमहल से आरम्भ होकर लालकिला तक समाप्त नहीं है। कुतुबमीनार और ताजमहल के सामने सेल्फी लेना फेशनबल लगता है लेकिन अपने मंदिरों में जाना तो दूर अधिकांश भारतीय उसके निर्माण के अद्भुत आर्किटेक्चर के बारे में भी नहीं जानते।

9 वीं शताब्दी में निर्मित इस मंदिर के प्रत्येक हिस्से पर नक्काशियों की गई हैं, इन नक्काशियों की कुल संख्या एक लाख से भी अधिक अनुमानित है। इस मंदिर में अलंगर नामक मंडल में एक ही चट्टान से बने चार संगीतमय स्तंभ हैं जिनसे अलग-अलग संगीत उत्पन्न

किया जाता है। कभी इसी स्थान पर बसे घने जंगलों में महर्षि अत्रि अपनी पत्नी अनुसुइया के साथ निवास करते थे।

सुचिन्द्रम का स्थानुमलयन मंदिर आज त्रिमूर्ति के प्रति आस्था का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। मंदिर में दो हजार वर्ष पुराना एक वृक्ष है, जिसे तमिल भाषा में कोनायडी वृक्ष कहा जाता है। चमकदार पत्तियों वाले इस वृक्ष का तना खोखला है। इस खोखले भाग में ही त्रिमूर्ति स्थापित है। इस स्थान पर पहली बार मंदिर का निर्माण 9वीं शताब्दी में हुआ था। उस काल के शिलालेख आज भी यहां मौजूद हैं।

17वीं शताब्दी में मंदिर को एक नया रूप प्रदान किया गया। मंदिर में करीब तीस पूजा स्थल हैं। इनमें से एक स्थान पर भगवान विष्णु की अष्टधातु प्रतिमा विराजमान है। मंदिर प्रवेश के दाईं ओर सीता-राम की प्रतिमा स्थापित है। पास ही पवन पुत्र हनुमान की एक 18 फुट ऊंची प्रतिमा है। ऐसी मान्यता है कि इसी विशाल रूप में हनुमान अशोक वाटिका में सीता जी के सामने प्रकट हुए और उन्हें

गालत समय पर सोने से आपकी उम्र तेजी से बढ़ती है

आयुर्वेद ने 2,000 साल पहले यह कहा था, विज्ञान ने पिछले 20 सालों में इसे साबित कर दिया है।

यहाँ बताया गया है कि आप कब सोते हैं, यह आपके सोचने से ज्यादा मायने रखता है इसे कैसे ठीक किया जा सकता है आयुर्वेद रात्रि को तीन भागों में विभाजित करता है:

कफ काल → शाम 6-10 बजे
पित्तकाल → रात 10 बजे-सुबह 2 बजे
वातकाल → सुबह 2-6 बजे
आपका शरीर प्रत्येक चरण में अपनी गति बदलता है।
समय चूकना → आपके शरीर पर दबाव डालना।
कफ काल में नींद
1. कफ भारी होता है, जमीन से जुड़ा होता है।
2. सोने का सबसे अच्छा समय = रात 10 बजे

से पहले।
3. नींद आना आसान, गहरी नींद।
अगर आप इससे आगे बढ़ते हैं → तो आप पित्त काल में प्रवेश करते हैं और जागते हैं...
पित्तकाल = मरम्मत का समय
रात 10 बजे से सुबह 2 बजे तक आपका लिवर डिटॉक्स होता है, कोशिकाओं की मरम्मत होती है और हार्मोन संतुलित होते हैं। अगर आप जाग रहे हैं, तो आप इस ऊर्जा को ठीक होने के बजाय गतिविधियों में खर्च कर रहे हैं।
दोषकालिक = थकान, त्वचा की उम्र बढ़ना, कमजोर प्रतिरक्षा।
वात काल = रचनात्मकता मोड
सुबह 2 से 6 बजे तक: मन सक्रिय रहता है, स्वप्नदोष गहरा होता है, अंतर्ज्ञान प्रखर होता है।
अगर आप पूरी नींद स्वाभाविक रूप से लेते हैं → तो आप हल्के और तर्रोता जा होकर उठते हैं।
अगर आप बहुत देर तक जागते हैं → तो आगले



दिन आप तनावग्रस्त, चिंतित और सुस्तर रहते हैं।
आधुनिक विज्ञान का समर्थन असंतुलित सर्कैडियन लय = चयापचय संबंधी समस्याओं का अधिक जोखिम।
विकास हार्मोन और मेलैटोनिन रात में जल्दी चरम पर पहुँच जाते हैं - इन्हें न सोएँ, तो मरम्मत के

लाभ खोजें।
देर से सोने वालों में सूजन के लक्षण ज्यादा दिखाई देते हैं = तेजी से बुढ़ापा।
त्वरित समाधान: आयुर्वेदिक नींद रीसेट
1. रात 10 बजे तक बिस्तर पर पहुँच जाएँ (हो सके तो पहले भी)

2. सोने से 1 घंटा पहले स्क्रीन से दूर रहें
3. सूर्यास्त के बाद रोशनी कम कर दें
4. सोने से 2-3 घंटे पहले खाना खाएँ
5. सूर्योदय के आसपास जागें
- 2-सप्ताह की चुनौती
1. 14 रातों तक रात 10 बजे से पहले सोने की कोशिश करें।
2. अपने मूड, त्वचा और ऊर्जा पर ध्यान दें।
ज्यादातर लोगों को एक हफ्ते में ही साफ फर्क नजर आता है।

सही समय पर सोना = मुफ्त में बुढ़ापा रोधी।
बात सिर्फ 8 घंटे की नहीं है... बात तो तब की है जब आप उठेंगे पाँद।
प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान एकमत हैं: जल्दी सोएँ, बेहतर जीवन जिएँ। आपका वर्तमान सोने का समय क्या है... और क्या आपको लगता है कि इससे आपकी ऊर्जा को लाभ होता है या हानि होती है ?

प्रेम - पच्चीसा (भाग 22):



राजेन्द्र रंजन गायकवाड़
सेवानिवृत्त जेल अधीक्षक
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

पंचायत में जब रोहन, माया, डॉ. सुधा और पंकज ने सच्चाई सामने रखी और गांव वाले उनकी बात से संतुष्ट हो गए तभी अचानक एक शोर सुनाई दिया। यह जग्गू था, गांव का कुख्यात शराबी, जो नशे में धुत होकर जोर-जोर से चिल्लाता हुआ पंचायत भवन में आ घुसा। उसकी आंखें लाल थीं और वह अस्पष्ट शब्दों में चिल्ला रहा था, रोहन ने तू बड़ा साधु बनता है, लेकिन सब जानते हैं तेरा सच। तू और वो डॉक्टरनी...र उसकी बातें सुनकर कुछ लोग हँसने लगे, लेकिन माहौल तनावपूर्ण हो गया।

रोहन ने गहरी सांस ली और शांत स्वर में कहा, जग्गू भाई, शांत हो जाओ। बैठो, बात करते हैं। उसकी शांत आवाज में एक अजीब सा आकर्षण था, जिसने जग्गू को थोड़ा ठिठकने पर मजबूर कर दिया। माया ने तुरंत एक गिलास पानी मंगवाया और जग्गू को पकड़ाया। जग्गू ने पानी का गिलास लिया, लेकिन फिर भी बड़बड़ाता रहा, रतुम सब मिले हुए हो, मुझे बेवकूफ बनाते हो। गुस्से में गिलास जमीन पर पटक दिया।

रोहन ने धैर्य रखते हुए कहा, जग्गू तुम्हें लगता है मैंने कुछ गलत किया, तो बता तेरे पास क्या सबूत है। लेकिन पहले शांत होकर सुनो। रोहन ने फिर से पंचायत में मौजूद लोगों को संबोधित किया, जग्गू हमारे गांव का हिस्सा है।

उसकी बात भी सुनी जानी चाहिए। लेकिन ये अफवाहें, ये नशा, ये सब हमें बांट रहा है। हम चाहते हैं कि हमारा गांव एकजुट हो, और जग्गू जैसे लोग भी हमारी समाज सेवा का हिस्सा बनें और नशापान से मुक्त हों। जग्गू जो अब तक चिल्ला रहा था, रोहन की बात सुनकर थोड़ा शांत हुआ। शायद रोहन की सच्चाई और शांत स्वभाव ने उसे प्रभावित किया। डॉ. सुधा ने आगे बढ़कर कहा, जग्गू तुम एक मजबूत इंसान हो। तुम्हारी ताकत को नशे में बर्बाद मत करो। हम तुम्हें गांव के स्वास्थ्य शिविर में शामिल करना चाहते हैं। तुम दूसरों की मदद कर सकते हो।

ये सुनकर जग्गू की आंखों में एक अजीब सी चमक आई। उसने पानी का गिलास टेबल पर रखा और बोला, रतुम्झे

कोई नहीं समझता। सब मुझसे नफरत करते हैं। मैं माया ने तुरंत कहा, जग्गू, हम तुमसे नफरत नहीं करते। हम चाहते हैं तुम अपने आप को बदलो। हम सब तुम्हारे साथ हैं।

पंचायत के सरपंच ने भी जग्गू को समझाया, 'जग्गू रोहन और माया ने गांव के लिए बहुत कुछ किया है। अगर तुम चाहो, तो तुम भी उनके साथ मिलकर कुछ अच्छा कर सकते हो।' जग्गू चुप हो गया। उसने फिर झुकाया और कुछ देर सोचने के बाद कहा, रतुम... मैं शराब छोड़ना चाहता हूँ। लेकिन मुझे नहीं पता कैसे और कब तक छूटेंगी ?

रोहन ने तुरंत मुँह को भुनाया। उसने कहा, हम तुम्हारी मदद करेंगे। डॉ. सुधा तुम्हें नशा छोड़ने के लिए सही सलाह देंगी, और हम सब तुम्हारे साथ

खड़े रहेंगे। लेकिन तुम्हें खुद एक संकल्प लेना होगा। जग्गू ने गहरी सांस ली और बोला, रठीक है, रोहन। मैं आज संकल्प लेता हूँ कि मैं शराब को हाथ नहीं लगाऊंगा। और... और मैं तुम्हारे साथ समाज सेवा में शामिल होऊंगा। इतनी आवाज में एक नई दृढ़ता थी। पंचायत में तालियां गूंज उठीं। गांव वालों ने जग्गू के इस फैसले का स्वागत किया।

रोहन ने जग्गू को गले लगाया और कहा, जग्गू, ये तुम्हारी नई शुरुआत है। हम सब तुम्हारे साथ हैं। डॉ. सुधा ने जबकू को नशा मुक्ति केंद्र से जोड़ने का वादा किया, और माया ने उसे स्वास्थ्य शिविरों में छोटे-मोटे काम सौंपने की बात कही ताकि वह व्यस्त रहे।

अगले कुछ महीनों में, जग्गू ने धीरे-धीरे शराब छोड़ दी। वह रोहन और माया

के साथ गांव के विकास कार्यों में शामिल हुआ। उसकी मेहनत और बदलाव को देखकर गांव वालों का नजरिया भी बदल गया। जबकू अब गांव का एक सम्मानित सदस्य बन गया, और उसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। इस तरह, रोहन ने न सिर्फ अपनी सच्चाई को साबित किया, बल्कि एक इंसान को नई जिंदगी भी दी। गांव में एकता और सकारात्मकता की नई लहर दौड़ी, और रोहन व माया की समाज सेवा का कारवां और मजबूत हो गया।

प्रेम से किसी को समझाया जाए तो अंततः सच्चाई और धैर्य से हर मुश्किल को जीता जा सकता है, और एक इंसान का बदलाव पूरे समाज को प्रेरित कर सकता है।

(भाग 23)

राजेन्द्र रंजन गायकवाड़

नर्सिंग असिस्टेंट विद्यार्थियों ने ग्रामीण क्षेत्रों में दी स्वास्थ्य शिक्षा



बिलासपुर, छत्तीसगढ़। विश्वास सोशल वेलफेयर सोसाइटी (उपासना एजुकेशन ट्रस्ट) जरहाभाटा बिलासपुर के नर्सिंग असिस्टेंट पाठ्यक्रम के छात्र-छात्राओं ने ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर लोगों को स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान की। विद्यार्थियों ने गहवट, चकरभाटा, नांदघाट, जरहाभाटा, महाराणा प्रताप चौक, राहंगी, जोगीपुर और नवागांव जैसे क्षेत्रों में पहुंचकर महिलाओं, बच्चों और पुरुषों को जागरूक किया। स्वास्थ्य शिक्षा के अंतर्गत माहवारी, मेनोपांज, टीबी (ट्यूबरक्यूलोसिस), सर्बेटेस एब्यूज, हेपेटाइटिस और कुष्ठ रोग जैसे गंभीर विषयों पर विस्तृत

जानकारी दी गई। विद्यार्थियों ने समझाया कि इन बीमारियों से बचाव और समय पर उपचार से जीवन को स्वस्थ बनाया जा सकता है। ग्रामीण लोगों ने इन विषयों पर रुचि से शिक्षा प्राप्त की और विद्यार्थियों के प्रयासों की सराहना की। स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने वाली टीम में शीतल, रागिनी, राखी, झनकृति, राशिका, सोनम, सत्यम, नीतू और दीपिका शामिल रहे। इन छात्र-छात्राओं ने उदाहरणों और सरल भाषा के माध्यम से ग्रामीणों को जागरूक किया, जिससे लोग आसानी से विषय को समझ सके। गौरतलब है कि उपासना एजुकेशन ट्रस्ट, जो पिछले आठ वर्षों

से जरहाभाटा में संचालित है, गरीब और जरूरतमंद विद्यार्थियों को चिकित्सा संबंधी प्रशिक्षण उपलब्ध करा रहा है। यहां नर्सिंग असिस्टेंट, मेंडिकल लैब टेक्नीशियन और ओटी टेक्नीशियन जैसे कोर्स संचालित किए जाते हैं। संस्था का उद्देश्य समाज को प्रशिक्षित युवाओं के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं से जोड़ना है। ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित इस कार्यक्रम ने न केवल स्थानीय लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया बल्कि विद्यार्थियों को भी सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने का अवसर दिया। इस पहल ने यह संदेश दिया कि युवा पीढ़ी यदि शिक्षा के साथ समाजहित में कार्य करे तो बड़ा बदलाव संभव है।

आज पूरी दुनिया मानसिक स्वास्थ्य संकट से गुजर रही है। आपा-धापी व भागम-भाग भरी इस जिंदगी में हर कोई व्यक्ति कहीं न कहीं तनाव, अवसाद झेल रहा है। कहना गलत नहीं होगा कि सामाजिक दबाव, डिजिटल निर्भरता और आर्थिक असुरक्षा ने मानसिक स्वास्थ्य को गहराई से प्रभावित किया है। युद्ध, प्रवासन और प्राकृतिक आपदाएँ भी कहीं न कहीं मानसिक स्वास्थ्य संकट का कारण हैं। वैश्विक परिदृश्य को यदि हम यहां पर बात करें तो विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, हर 8 में से 1 व्यक्ति किसी न किसी मानसिक स्वास्थ्य समस्या से जूझ रहा है। इस आलेख में ऊपर जानकारी दे चुका हूँ कि अवसाद (डिप्रेशन) और चिंता (एंकसाइटी) सबसे सामान्य समस्याएँ हैं, जो कामकाजी क्षमता और जीवन की गुणवत्ता को बुरी तरह प्रभावित करती हैं। आत्महत्या (सुसाइड) 15-29 वर्ष आयु वर्ग में प्रमुख मृत्यु कारणों में से एक है। जब कोविड-19 महामारी आई तो इसने अकेलेलेपन, तनाव और अवसाद को और बढ़ा दिया। बहरहाल, दुनियाभर में एक अरब लोग मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे हैं। दरअसल, इस संबंध में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने नई रिपोर्ट जारी की है। मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में चिंता और अवसाद को सबसे आम बताया है। रिपोर्ट में कहा गया कि इन बीमारियों की वजह से ईंसान के जीवन और सेहत के साथ-साथ अर्थव्यवस्था पर भी असर पड़ रहा है। वर्ष 2021 में 7.27 लाख लोगों ने अवसाद के कारण आत्महत्या की। वहीं डिप्रेशन और चिंता से हर साल अर्थव्यवस्था को लगभग एक ट्रिलियन डॉलर का नुकसान सिर्फ कामकाजी क्षमता घटने से हो रहा है। यदि हम यहां पर भारत में स्थिति की बात करें तो निम्नोक्त (राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिका विज्ञान संस्थान) द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार, भारत में 10.6 प्रतिशत वयस्क मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित हैं। वहीं मानसिक स्वास्थ्य विकारों का जीवनकाल प्रसार 13.7% है। वहीं मानसिक विकारों से प्रस्त 70 से 92 प्रतिशत लोगों को अच्छा उपचार नहीं मिल पाता है। रिपोर्ट के अनुसार, भारत में अवसाद से पीड़ित महिलाएँ स्वास्थ्य देखभाल पर तीन गुना ज्यादा पैसा खर्च कर रही हैं। करीब आठ हजार से अधिक महिलाओं के डाटा का विश्लेषण किया गया। पाया गया 24 से 44 वर्ष की महिलाएँ औसतन



तौन से पांच हजार रुपये स्वास्थ्य पर खर्च कर रही हैं, जो उनकी आर्थिक आय से अधिक है। इसमें यह भी देखा गया कि करीब 71 फीसदी महिलाओं में चिंता और अवसाद दोनों मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रही थी। रिपोर्ट में सकारात्मक बदलाव की बात भी कही गई है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार हर 71 फीसदी देशों ने मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं में शामिल करना शुरू कर दिया है। वहीं आपातकालीन हालात में मानसिक सहायता देने की क्षमता तेजी से बढ़ी है। 2020 में यह सुविधा 39 देशों में थी, जो अब बढ़कर 80 फीसदी से अधिक हो गई है। बहरहाल, कहना गलत नहीं होगा कि दुनिया में मानसिक स्वास्थ्य संकट की समस्या आज एक बड़ी व गंभीर समस्या बन चुकी है। दूसरे शब्दों में कहें तो आज की तेज-रफ्तार और प्रतिस्पर्धी दुनिया में मानसिक स्वास्थ्य संकट वैश्विक स्तर पर गंभीर समस्या बन चुका है और यह संकट केवल व्यक्तिगत ही नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक ढांचे को भी गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है। डिप्रेशन और एंजायटी से हर वर्ष लगभग 26 करोड़ लोग प्रभावित होते हैं। वास्तव में इस मानसिक स्वास्थ्य संकट के प्रमुख कारणों की यदि हम यहां पर बात करें तो इनमें क्रमशः तेज जीवनशैली और प्रतिस्पर्धा, तनाव, नौकरी का दबाव और आर्थिक असुरक्षा, सोशल मीडिया और डिजिटल लत, पारिवारिक/सामाजिक स्वास्थ्य देखभाल पर तीन गुना ज्यादा पैसा खर्च कर रही हैं। करीब आठ हजार से अधिक महिलाओं के डाटा का विश्लेषण किया गया। पाया गया 24 से 44 वर्ष की महिलाएँ औसतन

पड़ रहे हैं। यदि हम यहां पर स्वास्थ्य पर प्रभावों की बात करें तो इससे नौकरी की समस्या, नशे की लत, शारीरिक रोगों का खतरा बढ़ना, समाज पर प्रभावों की बात करें तो इससे रिश्तों में दरार, अपराध और हिंसा में बढ़ोतरी तथा अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभावों की यदि हम यहां पर बात करें तो विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार हर साल 1 ट्रिलियन डॉलर से अधिक का नुकसान सिर्फ उत्पादकता घटने के कारण होता है। मानसिक स्वास्थ्य को शारीरिक स्वास्थ्य जितना ही महत्व देकर व इस संबंध में जागरूकता अपनाकर मानसिक स्वास्थ्य संकट समाधान किया जा सकता है। इसके लिए जरूरत इस बात की है कि हम मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं और काउंसिलिंग को प्राथमिक स्वास्थ्य ढांचे का हिस्सा बनाने की दिशा में काम करें। समुदाय और परिवार की भूमिका की बात करें तो सहानुभूति और समर्थन देकर इस समस्या से काफी हद तक निजात पाई जा सकती है। व्यक्तिगत प्रयास जैसे कि ध्यान, योग, व्यायाम, डिजिटल डिटॉक्स, और जरूरत पड़ने पर थेरेपी आदि लेना, इस दिशा में मददगार कदम साबित हो सकते हैं। इसके अलावा, कार्यस्थल पर जैसे कि कर्मचारियों के लिए मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम और लचीलापन अन्य कदम हैं। वास्तव में, आज दुनिया को मानसिक स्वास्थ्य को 'विकल्प' नहीं बल्कि प्राथमिकता बनाना होगा। आज मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी श्रान्तियों और कलंक को दूर करने के लिए बड़े पैमाने पर अभियान चलाने, स्कूलों और कॉलेजों में मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने की आवश्यकता है। इतना ही नहीं, टीवी, रेडियो और सोशल

मीडिया पर जागरूकता अभियान भी इस क्रम में काफी मददगार साबित हो सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में टेली-मेंडिसिन और ऑनलाइन काउंसिलिंग को बढ़ावा देने के साथ ही साथ आज जरूरत इस बात की है कि प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (पीएचसी) और जिला अस्पतालों में मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों की नियुक्तियां भी की जाएं। इसके साथ ही, सरकारी अस्पतालों में मुफ्त या कम खर्च पर उपचार की व्यवस्था की जानी चाहिए। नीतिगत सुधारों की बात करें तो मानसिक स्वास्थ्य नीति और मेटल हेल्थकेयर एक्ट, 2017 का बहाल क्रियान्वयन आज की महती आवश्यकता है। मानसिक स्वास्थ्य बजट बढ़ाने की भी जरूरत है। इसके साथ ही कार्यस्थलों पर एल्मोई असिस्टेस प्रोग्राम (ईएपी) लागू करने की जरूरत है, ताकि नौकरी से जुड़े तनाव को कम किया जा सके। प्रौद्योगिकी का उपयोग करके मानसिक स्वास्थ्य ऐप्स और हेल्पलाइन (जैसे किरण हेल्पलाइन) का प्रचार किया जाना चाहिए तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (आआई) आधारित चैटबॉट और काउंसिलिंग सेवाओं का विस्तार किया जाना चाहिए। छात्रों के लिए परीक्षा तनाव और करियर दबाव को कम करने हेतु परामर्श सेवाएँ, किसानों और श्रमिक वर्गों में आत्महत्या रोकथाम के लिए आर्थिक व मानसिक समर्थन तथा महिलाओं, और बुजुर्गों के लिए विशेष मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए। इतना ही नहीं, सामाजिक स्तर पर बदलाव लाने के लिए गैर-सरकारी संगठनों और स्वयंसेवी संगठनों को शामिल करके कम्प्युनिटी सपोर्ट ग्रुप्स तैयार करने चाहिए। स्कूलों, कॉलेजों और कार्यस्थलों में तनाव प्रबंधन और माइंडफुलनेस कार्यशालाओं का आयोजन किया जा सकता है। कुल मिलाकर, यह बात कही जा सकती है कि आज हमारे देश भारत में मानसिक स्वास्थ्य संकट हल करने के लिए केवल डॉक्टरों की संख्या बढ़ाना ही काफी नहीं है, बल्कि जागरूकता, शिक्षा, नीति सुधार, समाज की सोच और तकनीक—सभी को मिलाकर एक व्यापक रणनीति अपनानी होगी। तभी वास्तव में हम इस समस्या से निजात पा सकेंगे और हमारे देश को एक खुशहाल, समृद्ध व विकसित राष्ट्र बना सकेंगे। हमारे छोटे-छोटे प्रयासों और पहल से बहुत कुछ संभव हो सकता है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

वर्किंग जॉर्नलिस्ट ऑफ इंडिया ने दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सहयोग से पत्रकारों के लिए आयोजित किया स्वास्थ्य जांच शिविर



स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

वर्किंग जॉर्नलिस्ट ऑफ इंडिया (WJI) ने लोकतंत्र के चौथे स्तंभ पत्रकारों और उनके परिवारों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए, दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (DSGMC) के सौजन्य से गुरुद्वारा बंगला साहिब में एक विशाल हेल्थ चेकअप कैम्प का आयोजन किया। इस अवसर पर दिल्ली और आसपास के इलाकों से बड़ी संख्या में पत्रकारों और उनके परिवार के सदस्यों ने हिस्सा लिया और विभिन्न स्वास्थ्य जांच करवाई। इस स्वास्थ्य जांच शिविर में जनरल फिजिशियन और विभिन्न स्वास्थ्य जांच करवाई। इस स्वास्थ्य जांच शिविर में जनरल फिजिशियन, हृदय रोग विशेषज्ञ, दंत चिकित्सक, फिजियोथेरेपी विशेषज्ञ सहित कई विभागों के अनुभवी डॉक्टरों ने अपनी सेवाएं प्रदान कीं। साथ ही ब्लड टेस्ट, एक्स-रे, सीटी स्कैन जैसी विभिन्न स्वास्थ्य जांच निःशुल्क की गईं, जिससे पत्रकार समुदाय को समय पर अपने स्वास्थ्य का आकलन करने का अवसर मिला। इस अवसर पर वर्किंग जॉर्नलिस्ट ऑफ

इंडिया के राष्ट्रीय महासचिव नरेंद्र भंडारी, दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष संदीप शर्मा, महासचिव देवेन्द्र तौमर, दिल्ली प्रभारी नरेंद्र धवन, देवेन्द्र पवार कार्यक्रम संयोजक, राष्ट्रीय सलाहकार सुरेन्द्र वर्मा, अशोक धवन, धर्मेन्द्र भदौरिया, ईश मलिक, स्वतंत्र भुल्लर, प्रित पाल सिंह, श्रवण शुकला, लवली शर्मा, सुनील परिहार, सुधीर सलुजा, सुंदरम जी, लक्ष्मण इंदौरिया, रीता मिश्रा, मुकेश कुमार, राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ दिल्ली NCR अध्यक्ष वीरेंद्र मुकेश मधुर, राष्ट्रीय सचिव अमलेश राजू सहित कई पदाधिकारी और वरिष्ठ पत्रकार मौजूद रहे। गुरु हरकिशन पॉलिक्लिनिक, गुरुद्वारा बंगला साहिब के चेयरमैन भूपिंदर सिंह भुल्लर ने इस अवसर पर कहा, "पत्रकार लोकतंत्र का चौथा स्तंभ हैं। वे समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनका स्वस्थ रहना न केवल पत्रकारिता बल्कि समाज और राष्ट्र के स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है। पत्रकारों के सम्मान और उनके कल्याण के

लिए दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सदैव तत्पर रहेगा।" वर्किंग जॉर्नलिस्ट ऑफ इंडिया ने दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का आभार जताते हुए कहा कि भविष्य में भी ऐसे स्वास्थ्य शिविर नियमित रूप से आयोजित किए जाएंगे, जिससे पत्रकारों और उनके परिवारों का स्वास्थ्य बेहतर रहे और वे बिना किसी चिंता के अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन कर सकें। उन्होंने कहा कि खबरों की आपाधापी के चलते दिल्ली NCR अध्यक्ष वीरेंद्र मुकेश मधुर, राष्ट्रीय सचिव अमलेश राजू सहित कई पदाधिकारी और वरिष्ठ पत्रकार मौजूद रहे। गुरु हरमीत सिंह कालका, महासचिव जगदीप सिंह बंगला साहिब के चेयरमैन भूपिंदर सिंह भुल्लर ने इस अवसर पर कहा, "पत्रकार लोकतंत्र का चौथा स्तंभ हैं। वे समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनका स्वस्थ रहना न केवल पत्रकारिता बल्कि समाज और राष्ट्र के स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है। पत्रकारों के सम्मान और उनके कल्याण के

अभी रिटायर नहीं होंगे मोदी

राजेश कुमार पासी

मोदी को तीसरा कार्यकाल मिलने से विपक्ष में हताशा बढ़ती जा रही है। दूसरी तरफ जो पूरा इकोसिस्टम मोदी को सत्ता से हटाना चाहता है, वो भी असहाय महसूस कर रहा है। 2024 के लोकसभा चुनाव में विपक्षी दलों और उनके इकोसिस्टम को लग रहा था कि इस बार वो मोदी को सत्ता से बाहर कर देंगे लेकिन उनकी उम्मीद टूट गई। अल्पमत की सरकार होने पर उनकी उम्मीद फिर जाग गई कि नीतीश और नायडू की बैसाखियों पर टिकी यह सरकार ज्यादा दिन नहीं चल पाएगी क्योंकि मोदी को गठबंधन सरकार चलाने का अनुभव नहीं है। एक साल बाद विपक्ष को समझ आ गया है कि निरन्तर भविष्य में इस सरकार को कोई खतरा नहीं है। ऐसे में सच प्रमुख मोहन भागवत के एक बयान ने विपक्ष को उम्मीदों से भर दिया। मोदी जब सत्ता में आये थे तो उन्होंने भाजपा के कई वरिष्ठ नेताओं को सक्रिय राजनीति से बाहर कर दिया था। इससे ये संदेश गया कि भाजपा अब बड़े नेताओं को पार्टी में रखने वाली नहीं है। विशेष रूप से भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी को जब भाजपा ने टिकट नहीं दिया तो कहा जाना लगा कि पार्टी अब 75 साल से ज्यादा उम्र वाले नेताओं को बाहर का रास्ता दिखा रही है। इस बात की अनदेखी कर दी गई कि जब आडवाणी जी को भाजपा ने चुनावी राजनीति से बाहर किया तो उनकी उम्र 75 वर्ष से कहीं ज्यादा 92 वर्ष थी। इसी तरह मुस्लीम मोहोर जोशी को

भी भाजपा ने 85 वर्ष की आयु में टिकट नहीं दिया था और उन्होंने सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लिया था। विपक्ष ये विमर्श कहां से ले आया कि भाजपा अब 75 साल से ज्यादा उम्र के नेताओं को सक्रिय राजनीति से बाहर का रास्ता दिखा रही है। जब आडवाणी जी पार्टी में एक सांसद के रूप में 92 वर्ष तक रह सके हैं तो 75 साल वाला फार्मूला कहां से आ गया। भाजपा विरोधी जन चुके हैं कि प्रधानमंत्री मोदी को सत्ता से हटाना उनके वश की बात नहीं है। उन्होंने पूरी कोशिश करके देख लिया है कि मोदी की लोकप्रियता कम होने का नाम नहीं ले रही है। उनके लगाए आरोपों का जनता पर कोई असर नहीं होता है। विपक्ष नए-नए मुद्दे लेकर आता है लेकिन उसके मुद्दे जनता के मुद्दे नहीं बन पाते हैं। यही कारण है कि हताशा के हिस्सा देश विरोध तत्व चला जाता है। जब मोहन भागवत ने 75 साल में रिटायर होने के मोरोपें गिंगले के कथन का जिक्र किया था तो विपक्ष में बहुत बड़ी उम्मीद पैदा हो गई थी। उन्हें लगा कि मोदी को सत्ता से हटाना बेशक मुश्किल हो लेकिन देश विरोध तत्व चला जाता है। जब मोहन भागवत ने 75 साल में रिटायर हो जाना चाहिए तो मोदी भी रिटायर हो जाएंगे। उनकी उम्मीदों पर पानी फेरते हुए भागवत ने बयान दिया है कि मैंने किसी के लिए नहीं कहा कि उसे 75 साल में पद छोड़ देना चाहिए। उन्होंने दूसरी बात यह कही कि मैं भी 75 साल का होने जा रहा हूँ और मैं भी पद नहीं छोड़ने जा रहा हूँ।

पितृपक्ष 07 से 21 सितंबर 2025- भारतीय आस्था, संस्कृति और वैश्विक दृष्टिकोण का दार्शनिक पर्व

श्रद्धा इदं श्राद्ध - जो श्रद्धा से किया जाय, वह श्राद्ध है
एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गौडिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तर पर भारत मान्यताओं प्रथाओं परंपराओं और गहरी आध्यात्मिकता में आस्था रखने वाले देश के रूप में प्रसिद्ध है। अनेक कारणों में से यह भी एक कारण है कि पूरी दुनियां से सेलानी भारत भ्रमण पर आते हैं जो इन प्रथाओं परंपराओं आध्यात्मिकता को देख उनसे प्रेरणा लेने की कोशिश करते हैं। आधुनिक विज्ञान के इस डिजिटल युग में जहां मानव चांद पर मानव कॉलनी बनाने की ओर बढ़ गए हैं, सूर्य को अपनी मुट्ठी में लेने के प्रयास हो रहे हैं, मानव का स्थान अब रोबोट ले रहा है, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की दुनियां हदें पार कर रही है, परंतु भारत एक ऐसा देश है जिसकी सभ्यता और संस्कृति की जड़ें हजारों वर्षों पुरानी हैं। यहाँ का जीवन-दर्शन केवल वर्तमान तक सीमित नहीं है बल्कि अतीत और भविष्य को भी जोड़ता है। इसी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपरा का एक गहरा उदाहरण है पितृपक्ष, जिसे हर वर्ष भाद्रपद पूर्णिमा से लेकर आश्विन अमावस्या तक मनाया जाता है। वर्ष 2025 में यह पवित्र काष्ठखंड 7 सितंबर से 21 सितंबर तक रहेगा। यह समय भारतीय समाज में पूर्वजों की स्मृति, उनके प्रति कृतज्ञता और उनकी आत्मा की शांति के लिए किए जाने वाले कर्मकांड का प्रतीक है। इस पर्व का महत्व केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मनुष्य को उसकी जड़ों से जोड़ने और सामाजिक सामंजस्य बनाए रखने की प्रेरणा भी देता है। आज भारत के परिवार संघटन से एवें श्रद्धा से श्राद्ध मनाकर अपने पूर्वजों का आशीर्वाद प्राप्त कर रहा है। मान्यता के अनुसार इस दौरान हमारे पूर्वज

किसी न किसी रूप में धरती पर आते हैं और श्राद्ध को ग्रहण कर हमें आशीर्वाद देते हैं। भारतीय संस्कृति में पितृपक्ष को केवल कर्मकांड का पर्व नहीं माना गया है, बल्कि इसे आस्था और श्रद्धा का जीवंत प्रतीक समझा गया है। श्रद्धा इदं श्राद्ध का शास्त्रीय उद्देश्य यही बताता है कि जब किसी कार्य को श्रद्धा, निष्ठा और कृतज्ञता से किया जाता है तो वह श्राद्ध कहलाता है। इसीलिए पितृपक्ष केवल आचार-विचार का विषय नहीं है, बल्कि यह भावनाओं, रिश्तों और पारिवारिक मूल्यों का उत्सव है। जब मनुष्य अपने पूर्वजों का स्मरण करता है, उन्हे तर्पण, पिंडदान और भोजन अर्पण करता है, तो यह उसकी आत्मा को भी शांति प्रदान करता है। चूंकि यह 15 दिवसीय श्राद्ध 7 सितंबर 2025 से शुरू है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से, चर्चा करेंगे, श्रद्धा इदं श्राद्ध - जो श्रद्धा से किया जाय, वह श्राद्ध है।

साथियों बात अगर हम पितृपक्ष का मूल उद्देश्य को समझने की करें तो, यही है कि मनुष्य अपने जीवन में यह स्वीकार करे कि उसका अस्तित्व केवल उसके मेहनत का परिणाम नहीं है। उसकी योग्यता उसकी माता-पिता और पूर्वजों का रक्त बह रहा है, उसकी संस्कृति और संस्कार उसके पूर्वजों की धरोहर हैं। इसलिए यह पर्व केवल मृतकों को याद करने का माध्यम नहीं है बल्कि यह जीवितों के जीवन को भी अनुशासित और संतुलित करने का अवसर है। यह हमें यह स्मरण कराता है कि परिवार, समाज और संस्कृति की जड़ों को कभी भुलाया नहीं जा सकता। भारतीय धर्मग्रंथों में यह स्पष्ट कहा गया है कि हर मनुष्य पर तीन प्रकार के श्राद्ध होते हैं, देव श्राद्ध, ऋषि श्राद्ध और पितृ श्राद्ध। इनमें से पितृ श्राद्ध सर्वोपरि माना गया है क्योंकि माता-पिता और पूर्वजों के बिना किसी का अस्तित्व संभव नहीं

है। देव श्राद्ध हमें प्रकृति और देवताओं के प्रति कृतज्ञ बनाए रखता है, ऋषि श्राद्ध हमें ज्ञान और परंपरा को याद दिलाता है, जबकि पितृ श्राद्ध हमें जीवनदाता और हमारी जड़ों की स्मृति कराता है। इमान्-पिता, दादा-दादी और उन सभी बुजुर्गों को पितृ श्राद्ध के अंतर्गत माना गया है जिन्होंने हमें जीवन का आधार दिया। इसलिए पितृपक्ष में पितरों का स्मरण और उनका तर्पण करना केवल एक धार्मिक कर्तव्य नहीं बल्कि जीवन का नैतिक दायित्व भी है। साथियों बात अगर हम पितृपक्ष के दौरान किए जाने वाले कर्मकांडों की करें तो, उसमें तर्पण पिंडदान और ब्राह्मण भोजन प्रमुख हैं। शास्त्रों के अनुसार, तीन पीढ़ियों तक के पिता पक्ष और तीन पीढ़ियों तक के माता पक्ष के पूर्वजों का स्मरण करना आवश्यक है। इन्हें को 'पितर' कहा गया है। तर्पण के माध्यम से व्यक्ति जल अर्पण करके यह भावना व्यक्त करता है कि वह अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए समर्पित है। पिंडदान को रूप में अन्न का अर्पण उनके प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति है। यही कारण है कि इस काल में घर-घर में श्राद्ध और भक्ति का वातावरण रहता है और लोग अपने पूर्वजों के नाम से विशेष रूप से ब्राह्मणों या जरूरतमंदों को भोजन करते हैं। साथियों बात अगर हम पितृपक्ष का एक महत्वपूर्ण पहलू पितृ दोष की करें तो, ज्योतिष और धार्मिक मान्यता के अनुसार, जब परिवार में पूर्वजों की आत्मा को उचित संतुष्टि नहीं मिलती या उनके लिए श्राद्धपूर्वक श्राद्ध, तर्पण आदि नहीं किया जाता, तो इसे पितृ दोष कहा जाता है। इसका प्रभाव परिवार के जीवन पर पड़ता है, आर्थिक संकट या मानसिक तनाव से जोड़ा जाता है। पितृ दोष के कारण घर में प्रगति रुक सकती है और पारिवारिक संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। इस दोष को दूर करने के लिए

शास्त्रों में कई उपाय बताए गए हैं, जैसे, पितृपक्ष में विधिवत तर्पण करना, पिंडदान करना, गाय, कुत्ते और कौवे को भोजन कराना तथा ब्राह्मणों को दान देना। इसके अतिरिक्त, गीता पाठ, विष्णु सहस्रनाम, नारायण बलि और रुद्राभिषेक जैसे अनुष्ठान भी पितृ दोष को शांत करने में सहायक माने जाते हैं। साथियों बात अगर हम आधुनिक संदर्भ में पितृपक्ष का महत्व और भी बढ़ जाने की करें तो, आज की भाग-दौड़ भरी जिंदगी में लोग अक्सर अपने पूर्वजों और पारिवारिक मूल्यों को भूल जाते हैं। लेकिन यह पर्व उन्हें यह स्मरण कराता है कि हमारी जीवनशैली और हमारे संस्कार किसी व्यक्तिगत उपलब्धि का परिणाम नहीं हैं, बल्कि यह पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित धरोहर है। इसी कारण पितृपक्ष को मानव सभ्यता की कृतज्ञता का पर्व कहा जा सकता है। यह पर्व हमें यह सिखाता है कि आधुनिकता के बीच भी परंपराओं को जीवित रखना उतना ही आवश्यक है, जितना प्रगति करना। पितृपक्ष का एक गहरा मनोवैज्ञानिक महत्व भी है। जब लोग अपने पूर्वजों का स्मरण करते हैं, तो यह उन्हें आत्मिक संतोष और भावनात्मक स्थिरता प्रदान करता है। यह प्रक्रिया मानसिक शांति और परिवार के भीतर सामंजस्य लाने में सहायक होती है। पूर्वजों का स्मरण करने से व्यक्ति को अपने जीवन के संघर्षों में भी यह प्रेरणा मिलती है कि जैसे उनके पूर्वजों ने कठिनाइयों का सामना किया, वैसे ही वे चुनौतियों को पार कर सकते हैं। साथियों बातें अगर हम पितृपक्ष केवल भारत तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भावनात्मक प्रवासी समाज के माध्यम से पूरी दुनिया में फैल चुका है, इसको समझने की करें तो, अमेरिका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और अफ्रीका में बसे भारतीय समुदाय इस काल में विशेष श्राद्ध अनुष्ठान करते हैं। वैश्विक स्तर पर यह पर्व इसलिए भी

महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मनुष्य को उसकी जड़ों से जोड़े रखता है, चाहे वह कहीं भी रह रहा हो। जब प्रवासी भारतीय अपने घरों में पितरों का स्मरण करते हैं और अपने बच्चों को यह परंपरा बताते हैं, तो इससे भारतीय संस्कृति की निरंतरता बनी रहती है। इस प्रकार पितृपक्ष सांस्कृतिक पहचान और वैश्विक भारतीयता का भी प्रतीक बन चुका है। यदि वैश्विक दृष्टिकोण से देखा जाए तो पितृपक्ष का भाव अन्य संस्कृतियों में भी दिखाई देता है। चीन में 'किंग गिंग फेस्टिवल' (टांग स्वीपिंग डे), जापान में 'ओबोन उत्सव', मैक्सिको में 'डे ऑफ डेड्स', और यूरोप के कई हिस्सों में 'ऑल सोल्स डे' जैसे पर्व इसी बात का प्रतीक हैं कि पूरी दुनिया में मनुष्य अपने पूर्वजों को याद करने का उत्सव नहीं है बल्कि एक वैश्विक समानता दर्शाती है कि चाहे भाषा, भूगोल और परंपराएं अलग हों, लेकिन पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता को भावना वैश्विक स्तर पर समान है। इस दृष्टिकोण से पितृपक्ष केवल भारतीय पर्व नहीं बल्कि विश्व मानवता की साझा धरोहर के रूप में देखा जा सकता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि पितृपक्ष के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व को केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित न रखकर इसे एक मानव-धर्म और नैतिक कर्तव्य के रूप में देखा जाए। जब व्यक्ति अपने पूर्वजों को याद करता है तो वह यह भी सीखता है कि उसे आने वाली पीढ़ियों के लिए क्या धरोहर छोड़नी चाहिए। इस प्रकार पितृपक्ष केवल अतीत का उत्सव नहीं है बल्कि यह भविष्य के लिए जिम्मेदारी की याद दिलाने वाला पर्व भी है। साथियों बात अगर हम पितृपक्ष के 15 दिनों में हमारे पूर्वजों के हमारे आसपास होने के संकेतों की करें तो, (1) पितृ पक्ष में कौए का विशेष महत्व माना है, माना जाता है कि इन दिनों में पितर कौवों के रूप में धरती पर आते हैं और जल-अन्न ग्रहण करते हैं। पितृ पक्ष के दौरान अगर कौआ आपके घर में आकर

त्योहारी सीजन में टोयोटा की कारों पर भारी छूट, GST कटौती का सीधा लाभ!



टोयोटा किरलोस्कर मोटर ने संशोधित जीएसटी दरों का पूरा लाभ ग्राहकों को देने की घोषणा की है। नई कीमतें 22 सितंबर 2025 से लागू होंगी, ठीक त्योहारी सीजन की शुरुआत के समय। यह कदम ग्राहकों के लिए कार खरीदना और भी किफायती बना देगा। आइए विस्तार में जानते हैं कि Toyota की गाड़ियां कितनी सस्ती हुई हैं।

नई दिल्ली। टोयोटा किरलोस्कर मोटर (TKM) ने घोषणा की है कि वह हाल ही में संशोधित GST दरों का पूरा लाभ ग्राहकों को देगी। नई कीमतें 22 सितंबर 2025 से लागू होंगी, ठीक त्योहारी सीजन की शुरुआत के समय। यह कदम ग्राहकों के लिए कार खरीदना और भी किफायती बना देगा। आइए विस्तार में जानते हैं कि Toyota की गाड़ियां कितनी सस्ती हुई हैं।

Toyota की कारों पर कितना डिस्काउंट?

मॉडल	कीमत में कमी (रुपये में)
Glanza	85,300 तक
Taisor	1,11,100 तक
Rumion	48,700 तक
Hryder	65,400 तक

Crysta 1,80,600 तक
Hycross 1,15,800 तक
Fortuner 3,49,000 तक
Legender 3,34,000 तक
Hilux 2,52,700 तक
Camry 1,01,800 तक
Vellfire 2,78,000 तक

नई कीमतों के चलते अलग-अलग मॉडल पर हजारों से लेकर लाखों रुपये तक की बचत होगी। आइए देखें किस गाड़ी पर कितना फायदा मिलेगा।

कंपनी का बयान

Toyota के वाइस प्रेसिडेंट वरिंदर वाधवा ने कहा कि हम भारत सरकार का धन्यवाद करते हैं इस ऐतिहासिक सुधार के लिए। इस कदम से ग्राहकों के लिए गाड़ियां

ज्यादा किफायती होंगी और ऑटो सेक्टर में भरोसा और मजबूत होगा। त्योहारी सीजन में हमें उम्मीद है कि यह पहल मांग को और तेज करेगी। एक पारदर्शी और ग्राहक-केन्द्रित कंपनी होने के नाते हम यह पूरा फायदा ग्राहकों तक पहुंचा रहे हैं।

त्योहारी सीजन को मिलेगी रफ्तार
यह घोषणा नवरात्रि से कुछ हफ्ते पहले आई है, जब कार खरीदने का पीक टाइम होता है। इस कदम से Toyota की एंटी-लेवल हैचबैक Glanza से लेकर प्रीमियम SUV Fortuner, Camry और Vellfire तक सबकी बिक्री को मजबूती मिलेगी। साथ ही, सरकार के उद्देश्य खपत को बढ़ावा देने को भी सहारा मिलेगा।

इंजन, फीचर्स और कीमत में कौन है बेस्ट बाइक?

हीरो ग्लैमर एक्स बनाम होंडा सीबी125 हॉर्नेट हीरो मोटोकॉर्प ने Hero Glamour X 125 को लॉन्च किया जो कूज कंट्रोल वाली सबसे सस्ती बाइक है। इसका मुकाबला Honda CB125 Hornet से है। Glamour X में 124.7cc का इंजन है जबकि Hornet में 123.94 cc का इंजन है। Glamour X में कूज कंट्रोल राइडिंग मोड्स और डिजिटल LCD वलस्टर जैसे फीचर्स हैं जबकि Hornet में TFT डिस्प्ले और ब्लूथूथ कनेक्टिविटी है।

नई दिल्ली। हीरो मोटोकॉर्प ने हाल ही में भारत में Hero Glamour X 125 को लॉन्च किया है। भारत में यह सबसे सस्ती कूज कंट्रोल वाली बाइक है। इसके साथ ही कई बेहतरीन फीचर्स से लैस किया गया है। इसका मुकाबला Honda CB125 Hornet से देखने के लिए मिलेगा, जो हाल ही में भारत में लॉन्च हुई है। यह भी कई बेहतरीन फीचर्स के साथ आती है। हम यहां पर इन दोनों (Hero Glamour X Vs Honda CB125 Hornet) बाइक की तुलना करते हुए आपको बता रहे हैं कि इंजन, फीचर्स और कीमत के मामले में कौन बेहतर है?

Hero Glamour X Vs Honda CB125 Hornet: कीमत

Hero Glamour X को दो वेरिएंट में लॉन्च किया गया है। इसके ड्रम वेरिएंट की एक्स-शोरूम कीमत 89,999 रुपये है, जबकि डिस्क वेरिएंट की एक्स-शोरूम कीमत 99,999 रुपये है। वहीं, Honda CB125 Hornet को 1.12 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है।

Hero Glamour X Vs Honda CB125

Hornet: इंजन

Hero Glamour X में 124.7 cc का एयर-कूल्ड सिंगल-सिलेंडर Sprint EBT इंजन दिया गया है, जो 11.3 hp की पावर और 10.5 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसमें 5-स्पीड गियरबॉक्स दिया गया है।

Honda CB125 Hornet में 123.94 cc का 4-स्ट्रोक, SI इंजन दिया गया है, जो 11hp की पावर और 11.2 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 5-स्पीड ट्रांसमिशन के साथ जोड़ा गया है।

Hero Glamour X Vs Honda CB125 Hornet: फीचर्स

Hero Glamour X अपने सेगमेंट की सबसे एडवांस बाइक में से एक है। यह कूज कंट्रोल पाने वाली पहली 125cc बाइक है। इसके अलावा, राइड-बाय-वायर और तीन राइडिंग मोड्स इंको, रोड और पावर दिया गया है। इसके साथ ही रियर पीनक ब्रेक अलर्ट भी दिया गया है। इसके साथ ही फुल LED लाइटिंग, USB Type-C चार्जिंग पोर्ट, और फुली डिजिटल LCD क्लस्टर के साथ 60+ फंक्शन्स जैसे टैन-बाय-टैन नेविगेशन, कॉल/एसएमएस अलर्ट्स, गियर ईंडिकेटर, फ्यूल एफिशिएंसी डेटा, रेंज टू एम्प्टी, ब्राइटनेस एडजस्टमेंट और ब्लूथूथ कनेक्टिविटी जैसे फीचर्स भी दिए गए हैं।

Honda CB125 Hornet में ब्लूथूथ कनेक्टिविटी के साथ 4.2-इंच का TFT डिस्प्ले दिया गया है। यह हॉन्डा रोडसिक ऐप को भी सपोर्ट करता है, जिससे नेविगेशन, कॉल, SMS अलर्ट और म्यूजिक प्लेबैक की सुविधा मिलती है। इसमें एक USB टाइप-सी चार्जिंग पोर्ट, इंजन स्टॉपस्विच और इंजन इग्निटिवर के साथ एक साइड-स्टैंड ईंडिकेटर भी दिया गया है।

टीवीएस अपाचे ने मनाई 20वीं सालगिरह, लॉन्च किए खास एडिशन और नए वेरिएंट्स

टीवीएस मोटर कंपनी ने Apache ब्रांड की 20वीं सालगिरह पर लिमिटेड-एडिशन मॉडल और टॉप-एंड वेरिएंट्स पेश किए हैं। Apache RTR और RR लाइनअप में नए फीचर्स और अपडेट्स शामिल हैं। स्पेशल एडिशन में ब्लैक-एंड-शैम्पेन-गोल्ड लिवरी और डुअल-टोन अलॉय व्हील्स हैं। RTR 160 4V और RTR 200 4V को नए टॉप-एंड ट्रिम्स में एडवांस फीचर्स मिले हैं।

नई दिल्ली। TVS मोटर कंपनी ने अपने फ्लैगशिप ब्रांड Apache की 20वीं सालगिरह मनाते हुए खास लिमिटेड-एडिशन मॉडल्स और नए टॉप-एंड वेरिएंट्स लॉन्च किए हैं। इस मौके पर अपाचे RTR और RR लाइनअप में कई नए फीचर्स और अपडेट्स जोड़े गए हैं।

TVS Apache 20th Anniversary Limited Edition

स्पेशल 20th Anniversary Editions में शामिल हैं, जो RTR 160, RTR 180, RTR 200 4V, Apache RTR 310 और RR 310 हैं। इनमें ब्लैक-एंड-शैम्पेन-गोल्ड लिवरी, डुअल-टोन अलॉय व्हील्स, USB चार्जिंग पोर्ट और खास 20th Anniversary लोगो दिया गया है। कीमतें RTR 160 से शुरू होकर 1,37,990 (एक्स-शोरूम, दिल्ली) से शुरू होती हैं। टॉप मॉडल RR 310 की कीमत 3,37,000 रखी गई है।

नए टॉप-एंड RTR वेरिएंट्स

RTR 160 4V और RTR 200 4V को नए टॉप-एंड ट्रिम्स मिले हैं, जिनमें एडवांस फीचर्स जोड़े गए हैं। इसमें नया क्लास-डी प्रोजेक्टर हेडलैंप और LED DRLs, 5-इंच TFT इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर (Bluetooth और Voice Assist के साथ), ट्रेक्शन कंट्रोल सिस्टम,



असिस्ट, और स्लिपर क्लच दिया गया है। इसे नए कलर ऑप्शन रेसिंग रेड, मरीन ब्लू, मेट ब्लैक (160 4V) और मेट ब्लैक, ग्रेनाइट ग्रे (200 4V) भी दिए गए हैं।

TVS Apache स्पेशल 20th एनिवर्सरी एडिशन की कीमतें

मॉडल	वेरिएंट	कीमत (एक्स-शोरूम नई दिल्ली)
TVS Apache RTR 160 4V	Black edition	1,28,490
	Disc BT Special edition	1,34,970
	USD + LCD Variant	1,39,990
	New Top-End TFT + Projector Headlamp Variant	1,47,990

TVS Apache RTR 200 4V USD + LCD Variant 1,53,990
New Top-End TFT + Projector Headlamp Variant 1,59,990

TVS Apache 20th Anniversary Limited Edition

मॉडल	कीमत (एक्स-शोरूम दिल्ली)
TVS Apache RTR 160	1,37,990
TVS Apache RTR 180	1,39,990
TVS Apache RTR 160 4V	1,50,990
TVS Apache RTR 200 4V	1,62,990

TVS Apache RTR 310 3,11,000
TVS Apache RR310 3,37,000

TVS Apache की 20 साल की विरासत

TVS Apache ने 2005 से अब तक 80 देशों में 65 लाख से ज्यादा यूनिट्स बेची हैं। Apache ब्रांड अपने "Track to Road" फिलॉसफी के लिए जाना जाता है, जिसमें रेसिंग टेक्नोलॉजी को प्रोडक्शन बाइक में लाया जाता है। टीवीएस मोटर कंपनी के सीईओ के. एन. राधाकृष्णन ने कहा कि अपाचे की यह 20 साल की यात्रा हमारे 6.5 मिलियन राइडर्स और पूरी टीवीएस टीम को समर्पित है। आगे भी हम नए सेगमेंट और मार्केट्स में कदम रखकर अपाचे की विरासत को आगे बढ़ाएंगे।

एथर एनर्जी ने पेश किया अगली पीढ़ी का ईएल प्लेटफॉर्म और एथरस्टैक 7.0 साफ्टवेयर

एथर एनर्जी ने एथर कम्युनिटी डे 2025 में अगली पीढ़ी का ईएल प्लेटफॉर्म एथरस्टैक 7.0 साफ्टवेयर नेक्स्ट-जेन फास्ट चार्जर्स और इफिनिट कूज कंट्रोल सिस्टम लॉन्च किया। रिज्टा स्कूटर में भी अपडेट्स पेश किए गए। नया ईएल प्लेटफॉर्म वर्सैटिलिटी और स्केलेबिलिटी के लिए डिजाइन किया गया है। एथर ने-स्पेट रिडक्स भी दिखाया। एथरस्टैक 7.0 वॉयस इंटरैक्शन को सपोर्ट करता है। रिज्टा Z को टचस्क्रीन और नया कलर अपडेट मिला है।

नई दिल्ली। भारत की इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर कंपनी Ather Energy ने कई बड़े इनोवेशन की घोषणा की है। इसकी घोषणा कंपनी ने Ather Community Day 2025 पर की है। इस इवेंट में कंपनी ने अपनी अगली पीढ़ी का EL प्लेटफॉर्म, नया AtherStack 7.0 साफ्टवेयर, नेक्स्ट-जेन फास्ट चार्जर्स और Infinite Cruise कूज कंट्रोल सिस्टम लॉन्च किया। साथ ही, Rizta स्कूटर में भी बड़े अपडेट्स पेश किए गए। ये सभी अपडेट्स Ather के अगले ग्रोथ फेज की शुरुआत को दर्शाते हैं और भारतीय इलेक्ट्रिक व्हीकल इंडस्ट्री में नए मानक स्थापित करने जा रहे हैं। आइए विस्तार में इनके बारे में जानते हैं।

Ather कानया EL प्लेटफॉर्म

Ather ने अपनी पहली जनरेशन के 450 प्लेटफॉर्म के बाद पहली बार नया EL प्लेटफॉर्म पेश किया है। इसे वर्सैटिलिटी, स्केलेबिलिटी और कॉस्ट ऑप्टिमाइजेशन के लिए डिजाइन किया गया है। यह प्लेटफॉर्म एक ही बेस पर अलग-अलग सेगमेंट के स्कूटर्स बनाने की सुविधा देता है। 126 लाख किलोमीटर के फील्ड डेटा के आधार पर तैयार किया गया है। इसमें नया चैसिस, पावरट्रैन और

इलेक्ट्रॉनिक्स स्टेक तक दिया गया है। साथ ही 15% तेज असेंबली और 2X तेज सर्विसिंग, सर्विस इंटरवल अब 10,000 किमी तक दी जा रही है।

कॉन्सेप्ट Ather Redux दिखाया

Ather ने अपने इस नए प्लेटफॉर्म के जरिए कई चीजों में बदलाव किया है। इसके तहत बेहतर बैकिंग परफॉर्मेंस और कम स्ट्रॉपिंग डिस्टेंस के लिए AEBS दी गई है। इसमें ऑनबोर्ड चार्ज और मोटर कंट्रोल का इंटीग्रेशन, अब अलग पोर्टेबल चार्जर की जरूरत नहीं दी है। परफॉर्मेंस बेहतर करने के लिए Redux दिया गया है। Ather ने एक कॉन्सेप्ट Redux भी दिखाया, जो स्कूटर और मोटरसाइकिल के डायनेमिक्स का अनोखा कॉम्बिनेशन है।

इसमें अल्ट्रा-लाइट एल्यूमिनियम फ्रेम, 3D प्रिंटेड सीट, AmplyTex बॉडीपैनल, पोश्चर-आधारित मोड चेंज - स्कूटर से स्पॉर्ट बाइक में ट्रांसफॉर्मेशन, राइडिंग कॉन्सेप्ट के अनुसार इंटरफेस बदलने के लिए Morph-UI और अल्ट्रा-फास्ट एक्सीलरेशन के लिए नया थ्रिलिंग फीचर Take off, वॉयस असिस्टेंट के साथ स्मार्ट राइडिंग दी गई है। Ather ने AtherStack 7.0 पेश किया, जो अब वॉयस इंटरैक्शन को सपोर्ट करता है। इसके जरिए नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग के साथ सहज बातचीत, रियल-टाइम अलर्ट्स, लोकेशन शेयरिंग, टायर प्रेशर अपडेट, पोथोल अलर्ट, क्रेश अलर्ट, पार्कसेफ और लॉकसेफ, OTA अपडेट, एडवांस्ड कूज कंट्रोल दिया गया है। इसमें लो-स्पिड से 90 किमी/घंटा तक बिना ब्रेक डिसएंगेज के लिए सिटीकूज, चढ़ाई और ढलान पर स्मूट टॉर्क और रीजेनेरेटिव ब्रेकिंग के लिए हिल कंट्रोल और क्रॉवल कंट्रोल भी दिया गया है।

इस माह लॉन्च होने को तैयार एक से बढ़कर एक कारें, मारुति से लेकर विनफास्ट तक लिस्ट में शामिल

भारत में कई वाहन निर्माताओं की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। बिक्री बढ़ाने के लिए अधिकतर निर्माता अपनी कारों को अपडेट करते हैं और कुछ नई कारों को पेश और लॉन्च किया जाता है। इस महीने में भी कई कारों को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। ऐसी कौन सी कारें हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में वाहन निर्माताओं की ओर से समय समय पर अपनी कारों को अपडेट किया जाता है। इसके साथ ही कई नई कारों को पेश और लॉन्च भी किया जाता है। सितंबर महीने में भी कई कारों को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। किस निर्माता की ओर से किस गाड़ी को लॉन्च किया जाएगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti Escudo होगी लॉन्च

देश की प्रमुख वाहन निर्माता मारुति सुजुकी की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से सितंबर महीने में भी कई कारों को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से तीन सितंबर को Maruti Escudo नाम से नई एसयूवी को लॉन्च किया जाएगा। यह एसयूवी मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में ऑफर की जाएगी। इसे मारुति की ओर से एरिना डीलरशिप से ऑफर किया जाएगा।

Citroen Basalt X होगी लॉन्च



सितंबर में लॉन्च होंगी ये बेहतरीन कारें

सिट्रॉएन की ओर से भी भारत में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट के वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से कूप एसयूवी के तौर पर ऑफर की जाने वाली बेसाल्ट के नए वर्जन एक्स को पांच सितंबर को लॉन्च किया जाएगा।

Vinfast करेगी दो एसयूवी लॉन्च

इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता विनफास्ट की ओर से भी छह सितंबर को दो नई एसयूवी को इलेक्ट्रिक सेगमेंट में लॉन्च किया जाएगा। जानकारी के मुताबिक निर्माता Vinfast VF6 और VF7 को लॉन्च करेगी। इन दोनों ही एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाएगा।

Mahindra Thar Facelift

महिंद्रा की ओर से ऑफर की जाने वाली तीन दरवाजों वाली थार के फेसलिफ्ट को भी सितंबर महीने में लॉन्च किया जाएगा। हालांकि अभी इस एसयूवी के लॉन्च की तारीख तय नहीं हुई है। इसके फेसलिफ्ट में थार रॉक्स की तरह डिजाइन और फीचर्स को अपडेट किया जाएगा।

Volvo EX30 होगी लॉन्च

वॉल्वो की ओर से भी कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से सितंबर महीने में सबसे सस्ती इलेक्ट्रिक एसयूवी के तौर पर Volvo EX30 को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। लैनिक अभी इसके लॉन्च की तारीख तय नहीं हुई है।

डुकाटी डेजर्टएक्स रैली पर ₹ 1.5 लाख तक का डिस्काउंट

डुकाटी इंडिया अपनी DesertX Rally पर 1.5 लाख रुपये तक का डिस्काउंट दे रही है। यह ऑफर 31 अगस्त 2025 तक के लिए है। DesertX Rally की एक्स-शोरूम कीमत 23.71 लाख रुपये है। इस मोटरसाइकिल में 937cc का डुकाटी टेस्टस्ट्रेटा इंजन है जो 108 bhp की पावर और 92 Nm का टॉर्क देता है। इसमें छह राइडिंग मोड्स भी हैं।

नई दिल्ली। डुकाटी इंडिया अपनी DesertX Rally पर 1.5 लाख रुपये तक का डिस्काउंट दे रही है। इसे खरीदने वालों को 1.5 लाख रुपये का स्टोर क्रेडिट मिलेगा, जिससे वे स्टोर से ही एक्सेसरीज, राइडिंग जैकेट या अन्य सामान खरीद पाएंगे। डुकाटी की इस मोटरसाइकिल यह डिस्काउंट ऑफर केवल 31 अगस्त 2025 तक के लिए दिया जा रहा है।

Ducati DesertX Rally की कीमत

Ducati DesertX Rally की एक्स-शोरूम कीमत 23.71 लाख रुपये है। इसका मतलब है कि यह डुकाटी डेजर्टएक्स का सबसे महंगा मॉडल है।

डिजाइन और स्टाइलिंग

Ducati DesertX Rally में सामने की



दरफ 21-इंच और पीछे 18-इंच का मजबूत व्हील दिया गया है। यह डुकाटी लाइनअप में पहली मोटरसाइकिल है जिसमें ऑफ-रोड के लिए एसी खास कॉम्बिनेशन दिया जाता है। इसके परफॉर्मेंस को बढ़ाने के लिए, बाइक को एक नई livery दी गई है। डुकाटी ने इसमें स्टैंडर्ड रूप से पिरिलि स्क्रॉपियन रैली एसटीआर टायर दिए गए हैं, राइडर्स सड़क पर बेहतर उपयोग के लिए स्क्रॉपियन ट्रेल II टायर भी चुन सकते हैं।

सस्पेंशन और चैसिस

डुकाटी DesertX Rally के में बीक-स्टाइल फ्रंट मडगार्ड और कायबा सर्पेंशन दिया गया है। फ्रंट और रियर दोनों सर्पेंशन में एकस्ट्रा 20 मिमी की यात्रा दी गई है, जिससे ऑफ-रोड

हैंडलिंग और आराम बेहतर होता है। नए विकसित सेंट्रल-स्पोक व्हील्स भी पारंपरिक अलॉय रिम्स की तुलना में प्रभाव प्रतिरोध को बेहतर बनाते हैं, जिससे यह ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर अधिक लचीला बनती है।

इंजन और परफॉर्मेंस

Ducati DesertX Rally में 937cc का डुकाटी टेस्टस्ट्रेटा 11° ट्विन-सिलेंडर इंजन का इस्तेमाल किया गया है। यह इंजन 108 bhp की पावर और 92 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह इंजन हाईवे पर कूचिंग और मुश्किल ऑफ-रोड रास्तों दोनों के लिए आवश्यक पावर और लचीला बनाती है।

Ducati DesertX Rally के फीचर्स

इसमें छह राइडिंग मोड्स स्पॉर्ट, टूरिंग, अर्बन, वेट, एंड्युरो और रैली दी जाती हैं। इससे राइडर अपनी जरूरत के हिसाब से परफॉर्मेंस को बेहतर बना सकते हैं। इसमें कॉर्नरिंग एबीएस, डुकाटी ट्रेक्शन कंट्रोल (DTC), और डुकाटी व्हीली कंट्रोल (DWC) जैसे एडवांस्ड राइडर एड्स भी शामिल हैं। डुकाटी मल्टीमीडिया सिस्टम के साथ 5-इंच का कलर टोपोग्राफी डिस्प्ले स्मार्टफोन कनेक्टिविटी, म्यूजिक प्लेबैक, कॉल मैनैजमेंट और वैकल्पिक टैन-बाय-टैन नेविगेशन जैसे फीचर्स के साथ आती है।

वर्तमान परिदृश्य में जैविक खेती के लिए सूक्ष्मजीवों की आवश्यकता



विजय गर्ग

सूक्ष्मजीव जैविक खेती के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे मिट्टी के स्वास्थ्य, प्रजनन क्षमता और पौधों की रक्षा के प्राथमिक चालक हैं। पारंपरिक खेती के विपरीत जो सिंथेटिक रसायनों पर निर्भर करती है, जैविक खेती एक स्वस्थ और जैविक रूप से सक्रिय मिट्टी पारिस्थितिकी तंत्र पर निर्भर करती है, जहां रोगाणु आवश्यक कार्य करते हैं जो पौधे के विकास का समर्थन करते हैं। जैविक खेती में सूक्ष्मजीवों की प्रमुख भूमिकाएँ पोषक तत्वों की साइकिलिंग और मृदा उर्वरता पोषक तत्व साइकिल चलाने के पीछे सूक्ष्मजीव कार्यबल हैं। वे जटिल कार्बनिक पदार्थों को तोड़ते हैं, जैसे पौधे और पशु अवशेष, खनिज नामक प्रक्रिया के माध्यम से सरल, पौधे-उपलब्ध रूपों में। यह नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम जैसे आवश्यक पोषक तत्व जारी करता है, जो पौधे तब अवशोषित कर सकते हैं। विशिष्ट उदाहरणों में शामिल हैं:

नाइट्रोजन-फिक्सिंग बैक्टीरिया: ये रोगाणु, जैसे कि राइजोबियम (फलियों के साथ सहजीवी संबंध में) और एज़ोटोबैक्टर (मुक्त-जीवित), निष्क्रिय वायुमंडलीय नाइट्रोजन (N₂) को अमोनिया (NH₃) जैसे प्रयोग करने योग्य रूपों में परिवर्तित करते हैं, सिंथेटिक नाइट्रोजन उर्वरकों की आवश्यकता को कम करते हैं।

फास्फोरस-घुलनशील बैक्टीरिया और कवक: ये सूक्ष्मजीव, जिनमें बेसिलस और स्यूडोमोनास की कुछ प्रजातियां शामिल हैं, मिट्टी में अघुलनशील फॉस्फेट को भंग करते हैं, जिससे यह पौधों के लिए सुलभ हो जाता है।



जिससे यह पौधों के लिए सुलभ हो जाता है।

माइकोरिज़ल कवक: ये कवक पौधे की जड़ों के साथ सहजीवी संघ बनाते हैं, प्रभावी रूप से पौधे की जड़ प्रणाली का विस्तार करते हैं। यह पानी और पोषक तत्वों, विशेष रूप से फास्फोरस और अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों के अधिक कुशल ले जैव नियंत्रण एजेंटों के रूप में लाभकारी सूक्ष्मजीवों का उपयोग करती है।

एंटीऑक्सिडेंट रोगाणुओं: कुछ बैक्टीरिया और कवक यौगिकों का उत्पादन करते हैं जो हानिकारक पौधे रोगजनकों के विकास को रोकते हैं। उदाहरण के लिए, ट्राइकोडर्मा और स्यूडोमोनास की प्रजातियां जड़ सड़ांध और फंगल संक्रमण जैसे बीमारियों को दबा सकती हैं।

प्रतिरोगिता: लाभकारी रोगाणु मिट्टी में अंतरिक्ष और संसाधनों के लिए रोगजनकों

के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं, प्रभावी रूप से रोग के प्रकोप को रोकते या कम करते हैं।

मृदा संरचना में सुधार स्वस्थ मिट्टी संरचना के निर्माण और रखरखाव में सूक्ष्मजीव महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कुछ बैक्टीरिया और कवक पॉलीसेकेराइड और फंगल हाइड्रे नामक चिपचिपा पदार्थों को स्रावित करते हैं जो एक गाँद की तरह कार्य करते हैं, मिट्टी के कणों को एक साथ जोड़कर समुच्चय बनाते हैं। यह मिट्टी के वातन, पानी की ध्रुसपैठ और जड़ की पैट में सुधार करता है, जो बदले में मिट्टी के कटाव और संघनन को कम करता है। रोगाणुओं के लिए वर्तमान आवश्यकता वर्तमान परिदृश्य में, पर्यावरणीय क्षरण, जलवायु परिवर्तन और खाद्य सुरक्षा के बारे में बढ़ती चिंताओं के साथ, जैविक खेती में सूक्ष्मजीवों की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

पर्यावरणीय स्थिरता: सिंथेटिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर निर्भरता को कम करके, सूक्ष्मजीव मिट्टी और जल

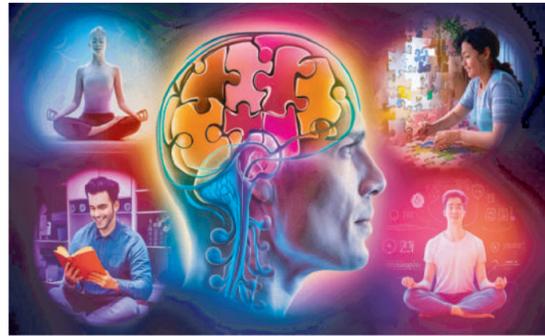
प्रदूषण को रोकने में मदद करते हैं। यह एक अधिक टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल कृषि प्रणाली को बढ़ावा देता है।

मृदा स्वास्थ्य बढ़ावा: पारंपरिक खेती के वर्षों में माइक्रोबियल विविधता को कम करके मिट्टी के स्वास्थ्य को नीचा दिखाया है। जैविक खेती, माइक्रोबियल स्वास्थ्य पर अपने ध्यान के साथ, इन मिट्टी को बहाल करने और पुनर्जीवित करने में मदद कर सकती है, जिससे उनकी दीर्घकालिक उत्पादकता सुनिश्चित हो सकती है।

जलवायु परिवर्तन शमन: कार्बन चक्र के लिए सूक्ष्मजीव महत्वपूर्ण हैं। एक स्वस्थ, सूक्ष्म समृद्ध मिट्टी अधिक कार्बन स्टोर कर सकती है, जिससे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में मदद मिलती है।

बढ़ी हुई फसल लचीलापन: सूक्ष्मजीव सुखे, लवणता और अत्यधिक तापमान जैसे पर्यावरणीय तनावों का सामना करने के लिए एक पौधे की क्षमता को बढ़ाते हैं, जिससे अधिक लचीला और स्थिर फसल की पैदावार होती है।

छात्रों के लिए मस्तिष्क के कामकाज को कैसे बढ़ावा दें



विजय गर्ग

एक छात्र के रूप में, आप अपने मस्तिष्क के कार्य को बढ़ावा दे सकते हैं और एक समग्र दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करके अपने शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार कर सकते हैं जिसमें प्रभावी अध्ययन रणनीतियाँ, एक स्वस्थ जीवन शैली और गतिविधियाँ शामिल हैं जो आपके दिमाग को चुनौती देती हैं। यहां ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रमुख क्षेत्रों का टूटना है: 1. अपने अध्ययन की आदतों का अनुकूलन करें

एक्टिव रिकॉल: निष्क्रिय रूप से अपने नोट्स को फिर से पढ़ने के बजाय, सक्रिय रूप से मेमोरी से जानकारी प्राप्त करें। इसमें आपकी पुस्तक को बंद करना और प्रमुख बिंदुओं का पीठ करना, फ्लैशकार्ड का उपयोग करना या रेब्रेन डंपर करना शामिल हो सकता है जहां आप किसी विषय के बारे में याद रखने वाली हर चीज को लिखते हैं। यह प्रक्रिया तंत्रिका कनेक्शन को मजबूत करती है और दीर्घकालिक प्रतिधारण में सुधार करती है।

जासूसी पुनरावृत्ति: क्रेम मत करो। इसके बजाय, समय के साथ बढ़ते अंतराल पर सामग्री को समीक्षा करें (उदाहरण के लिए, एक दिन, तीन दिन, एक सप्ताह के बाद)। यह विधि वैज्ञानिक रूप से दीर्घकालिक स्मृति को बढ़ाने के लिए सिद्ध है। डिजिटल ऐप्स और फ्लैशकार्ड आपको इस प्रक्रिया को स्वचालित करने में मदद कर सकते हैं।

इंटरलेविंग: एक ही अध्ययन सत्र के भीतर विभिन्न विषयों या समस्या प्रकारों को मिलाएं और मिलाएं। यह आपके मस्तिष्क को अवधारणाओं में कनेक्शन बनाने, संज्ञानात्मक लचीलेपन को बढ़ावा देने और समस्या को सुलझाने के कोशल में सुधार करने के लिए चुनौती देता है। उदाहरण के लिए, बीजगणित, ज्यामिति और आंकड़ों का अध्ययन करने के बीच वैकल्पिक।

ब्रेक ले: अंत में घंटों तक अध्ययन न करें। अपने मस्तिष्क को ऊर्जा बहाल करने और ध्यान फिर से संलग्न करने में मदद करने के लिए अपने अध्ययन सत्रों में छोटे ब्रेक (5-15 मिनट) को शामिल करें। पोमोडोरो तकनीक (5 मिनट के ब्रेक के बाद 25 मिनट के अध्ययन) जैसे तरीके बहुत प्रभावी हो सकते हैं। 2. अच्छा पोषण के साथ अपने मस्तिष्क ईंधन

ब्रेन-बूस्टिंग फूड्स खाएं: मस्तिष्क के स्वास्थ्य के लिए एक स्वस्थ आहार महत्वपूर्ण है। अपने भोजन में एंटीऑक्सिडेंट, स्वस्थ वसा और विटामिन से भरपूर खाद्य पदार्थों को शामिल करें।

ओमेगा-3 फैटी एसिड: अखरोट की तरह सामन और नट्स जैसी मछली में पाया जाता है। वे मस्तिष्क कोशिकाओं के निर्माण और परम्यत के लिए आवश्यक हैं।

एंटीऑक्सिडेंट: जामुन, डाकेंडेल्ट और पत्तेदार साग में पाया जाता है। वे मस्तिष्क की कोशिकाओं को नुकसान से बचाते हैं।

बी विटामिन: अंडे, एगोकेडो और सेम में पाया जाता है। वे मस्तिष्क रसायनों के उत्पादन में एक भूमिका निभाते हैं जो मूड और

अन्य मस्तिष्क कार्यों को प्रभावित करते हैं। धीमी गति से रिलीज कार्बोहाइड्रेट: साबुत अनाज जैसे खाद्य पदार्थ मस्तिष्क को ऊर्जा की स्थिर आपूर्ति प्रदान करते हैं।

हाइड्रेट रहें: निर्जलीकरण एक प्राकृतिक और संज्ञानात्मक कार्य को प्रभावित कर सकता है। दिन भर खूब पानी पीना सुनिश्चित करें। 3। शारीरिक और मानसिक व्यायाम को शामिल करें

नियमित शारीरिक गतिविधि: व्यायाम केवल आपके शरीर के लिए नहीं है; यह आपके मस्तिष्क के लिए महत्वपूर्ण है। नियमित शारीरिक गतिविधि स्मृति में सुधार कर सकती है, चिंता और अक्सर को कम कर सकती है, और संज्ञानात्मक कार्यों को बढ़ावा दे सकती है। यहां तक कि तैराकी या कुछ कूद जैसी गतिविधि के छोटे, जोरदार फटने से भी फायदा हो सकता है।

रेब्रेन गेम्स: व्यस्त रहें: अपनी पढ़ाई के बाहर की गतिविधियों के साथ अपने दिमाग को चुनौती दें।

पहेलियाँ: आरा पहेलियाँ, सुडोकू, और क्रॉसवर्ड कई संज्ञानात्मक क्षमताओं को धीरे धीरे बढ़ाते हैं और आपके याददाश्त को तेज करने में मदद कर सकते हैं।

एक नया कौशल सीखें: एक नई भाषा या एक संगीत वाद्ययंत्र सीखना संज्ञानात्मक कार्यों में सुधार कर सकता है, स्मृति को बढ़ा सकता है, और समस्या को सुलझाने के कोशल को बढ़ावा दे सकता है।

अपने गैर-प्रमुख हाथ का उपयोग करें: अपने दांतों को ब्रश करने या अपने गैर-प्रमुख हाथ से खाने जैसे सरल कार्य आपके मस्तिष्क के विपरीत पक्ष को उत्तेजित कर सकते हैं, संज्ञानात्मक क्षमताओं में सुधार कर सकते हैं। 4। आराम और नींद को प्राथमिकता दें

पर्याप्त नींद: अधिकांश छात्रों को प्रति रात 8-10 घंटे की नींद की आवश्यकता होती है। नींद स्मृति समेकन के लिए आवश्यक है, जिससे आपका मस्तिष्क दिन से जानकारी को संसाधित और संग्रहीत कर सकता है।

एक नींद दिनचर्या स्थापित करें: बिस्तर पर जाएं और सप्ताहांत पर भी प्रत्येक दिन एक ही समय में उठें। बिस्तर से कम से कम 30 मिनट से एक घंटे पहले स्क्रीन से बचें, क्योंकि नीली रोशनी नींद में हस्तक्षेप कर सकती है।

नल पर विचार करें: 20-60 मिनट की छोटी झपकी स्मृति समेकन में सहायता कर सकती है और सतर्कता बहाल कर सकती है। दोपहर में बहुत देर या गहरी सांस लेने जैसी तकनीक तनाव और चिंता को कम करने में मदद कर सकती है, जो संज्ञानात्मक कार्यों को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है।

माइंडफुलनेस और मेडिटेशन का अभ्यास करें: ध्यान और गहरी सांस लेने जैसी तकनीक तनाव और चिंता को कम करने में मदद कर सकती है, जो संज्ञानात्मक कार्यों को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है। माइंडफुलनेस पाँच लें: अपने अध्ययन सत्रों के दौरान, एक चिंतित दिमाग को शांत करने के लिए छोटे ब्रेक लें। कुछ मिनटों के लिए प्रकृति में बाहर निकलने से आपका ध्यान ताजा करने में भी मदद मिल सकती है।

रिवर्स में एक सदी: जब दिन कम हो जाते हैं

विजय गर्ग

“रिवर्स में एक सदी: जब डेज प्रो शॉर्टर एक सद्दा या काल्पनिक परिदृश्य का सुझाव देता है जहां समय की सामान्य प्रगति उलटी होती है, और एक सदी में एक दिन की लंबाई कम हो जाती है। यह कुछ अलग कोणों से पता लगाया जा सकता है: 1. एक विज्ञान कथा कहानी:

आधार: एक ऐसी दुनिया की कल्पना करें जहां एक रहस्यमय ब्रह्मांडीय घटना, या शायद एक उन्नत लेकिन खराबी वाली तकनीक, ने पृथ्वी के घूमने में तेजी ला दी है।

प्रभाव: जैसे-जैसे दिन कम होते जाते हैं, इसके परिणाम क्या होंगे?

जैविक: मनुष्य, जानवर और पौधे छोटी नींद चक्रों, परिवर्तित सैक्रैडियन लय और प्रकाश और अंधेरे के बीच अधिक तेजी से परिवर्तन के लिए (या अनुकूलन करने में विफल) कैसे अनुकूल होंगे?

सामाजिक: हमारा बुनियादी ढांचा इसे कैसे संभालेगा? घड़ियाँ, कैलेंडर, उपग्रह और संचार प्रणाली सभी को निरंतर पुनरावृत्ति की आवश्यकता होगी। लोगों के कार्य कार्यक्रम, सामाजिक जीवन और यहां तक कि मनोविज्ञान भी कैसे बदल जाएगा?

भूभौतिकीय: बड़ी हुई घूर्णी गति से मौसम के पैटर्न, महासागर की धाराओं और यहां तक कि पृथ्वी के आकार में महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे। दीर्घकालिक, भयावह परिणाम क्या होंगे? 2. एक दार्शनिक या कथित प्रतिबंध:

रूपक: रछोटे दिनर हमारी आधुनिक दुनिया के लिए एक रूपक हो सकता है, जहां जीवन की गति लगातार तेज होती दिख रही है। हमें लगता है कि हमारे पास कम और कम समय है, भले ही एक दिन अभी भी 24 घंटे है।

विषय: यह एक टिप्पणी हो सकती है:

अभिभूत होने की भावना: हम सीमित समय में अधिक से अधिक क्रेम करने की कोशिश कर रहे हैं। कनेक्शन का नुकसान: सब कुछ इतनी तेजी से आगे बढ़ने के साथ, हमारे पास अपने आसपास की दुनिया को धीमा करने और सराहना करने या दूसरों के साथ जुड़ने का समय नहीं है।

मानव अस्तित्व की टिक घड़ी: सदी जीवन भर का प्रतिनिधित्व कर सकती है, और छोटे दिन हमारी धारणा का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं कि हमारा जीवन उम्र के अनुसार अधिक तेजी से गुजर रहा है। 3। एक वैज्ञानिक स्पष्टीकरण (रिवर्स में):

वास्तविकता: वास्तव में, चंद्रमा से ज्वारीय बलों के कारण पृथ्वी का घूमना बहुत धीरे-धीरे धीमा हो रहा है। इसका मतलब है कि हमारे दिन लंबे हो रहे हैं, छोटे नहीं, एक दूसरी सदी के एक छोटे से अंश से।

अटकलें: रिवर्स में एक सदी के वैज्ञानिक अन्वेषण के लिए एक गहरे गोता लगाने की आवश्यकता होगी जो दिनों को छोटा बनाने के लिए होना होगा। इसमें चर्चा करना शामिल होगा:

कोणीय गति का संरक्षण: क्या बल या घटना पृथ्वी को पर्याप्त ऊर्जा प्रदान कर सकती है ताकि इसे तेजी से स्पिन किया जा सके?

परिणाम: जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, गुरुत्वाकर्षण, मौसम और पृथ्वी के आकार पर प्रभाव अपार और संभावित भयावह होगा। कोई फर्क नहीं पड़ता कि दृष्टिकोण, रिवर्स में एक सदी: जब दिन कम हो जाना एक आकर्षक और सोचा उत्तेजक अवधारणा है। यह हमें समय और हमारे श्रम की मौलिक लय के साथ हमारे संबंधों पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर करता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

सच्चा शिष्य जीवनभर गुरु की सीख को आत्मसात करता है

गुरु जीवन के उस महान ज्योति स्तंभ हैं, जो अज्ञान के अंधकार से हमें उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाते हैं, भारतीय संस्कृति में गुरु को ब्रह्मा, विष्णु महेश के समान पूजनीय माना गया है, गुरु हर दिन, हर समय हमारे भीतर नया ज्ञान, संस्कार और अनुशासन अंकुरित करते हैं, माता-पिता के बाद गुरु ही हैं जो मानवता का सच्चा अर्थ और जीवन जीने की राह सिखाते हैं, वे केवल विषय ज्ञान ही नहीं देते, बल्कि कठिनाइयों में सही दिशा, बुराइयों से बचाव और आत्मविश्वास का संचार करते हैं, जो का सान्निध्य जीवन को निखारता है, हर क्षेत्र में गुरु की विशेष भूमिका है, नृत्य, कला, संगीत, विज्ञान, जीवन के हर मोड़ पर शिष्य को आपको पारंगत करने वाला गुरु ही है, शिक्षा चाहे किसी भी विषय की हो, बिना गुरु के उसका सार जानना असंभव है, महारूपों ने भी गुरु को भगवान से ऊंचा स्थान दिया, गुरु के आशीर्वाद और मार्गदर्शन के बिना कोई भी लक्ष्य, कोई भी सफलता अधूरी है, गुरु का आदर एक दिन या पर्व तक सीमित नहीं, गुरु पूर्णमा हो या शिक्षक दिवस, यह केवल स्मरण करवाने वाले दिन हैं, असली सम्मान और श्रद्धा तो प्रतिदिन है, सच्चा शिष्य जीवनभर गुरु की सीख को आत्मसात करता है और उनके प्रति श्रद्धा रखता है, गुरु का महत्व हमेशा, हर दिन, हर समय बना रहता है, क्योंकि वही हमारी पीढ़ी, समाज और भविष्य का निर्माण करते हैं।



डॉ. मुश्ताक अहमद शाह

खेलने के लिए कितनी आजाद हैं भारत की लड़कियां

विजय गर्ग

जब भारत ने 1948 के लंदन ओलंपिक में भाग लिया तो पूरे दल में एक भी महिला खिलाड़ी नहीं थी. 78 सालों के बाद भी इस स्थिति में कुछ खास बदलाव नहीं आया है. खेल के क्षेत्र में भारत की लड़कियां आज भी संघर्ष कर रही हैं.

एक खेल प्रतियोगिता में मेडल लेतीं पैरा एथलीट अमीषा रावत अमीषा रावत ने शारीरिक विकलांगता को अपने लिए कभी बाधा नहीं बनने दिया

उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले की रहने वाली अमीषा रावत के लिए पहाड़ों के पथरीले रास्ते उतनी बड़ी बाधा नहीं थे जितना उनके आस पास मौजूद लोग. शारीरिक विकलांगता की वजह से साथ पढ़ने वाले बच्चे न सिर्फ उन्हें लाचारी भरी निगाह से देखते थे बल्कि मजाक भी उड़ाते थे.

ऐसे लोगों को जवाब देने के लिए अमीषा ने अपने काम और सफलता को जरिया बनाया. अमीषा ने आगे चलकर न सिर्फ देश में अपने खेल (शॉट पुट) से नाम कमाया बल्कि पेरिस पैरालिंपिक के लिए भी क्वालिफाई किया.

भारत में आज भी अमीषा जैसी तमाम लड़कियां हैं, जो न सिर्फ खेलों में बेहतर प्रदर्शन कर सकती हैं बल्कि देश के लिए सोने, चांदी और कांसे के तमगों भी ला सकती हैं. लेकिन सामाजिक रूढ़िवादिता, लैंगिक असमानता जैसे तमाम रोड़े उनके रास्ते की रुकावट बनते हैं.

पेरिस ओलंपिक में मेडल जीतने के बाद मनु भाकर आजादी के बाद 1948 के लंदन ओलंपिक में भारतीय दल में एक भी महिला खिलाड़ी नहीं था खेलों में महिलाओं की भागीदारी

आजादी के बाद भारत में महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय लक्ष्य रहा है. खेल का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है, जहां महिलाओं की भागीदारी न केवल शारीरिक स्वास्थ्य और व्यक्तिगत विकास के लिए जरूरी है, बल्कि यह सामाजिक रूढ़िवादिता को तोड़ने, लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और इसमें सफल करियर बनाने का एक शक्तिशाली माध्यम भी है.

बावजूद इसके खेलों का महाकुंभ माने जाने वाले ओलंपिक में महिलाओं की भागीदारी बमुश्किल ही पुरुषों के बराबर पहुंच पाई है. 2024 में हुए पेरिस ओलंपिक में भारत की तरफ से कुल 117 खिलाड़ियों ने भाग लिया, जिसमें 70 पुरुष और महज 47 महिलाएँ थीं.

ओलंपिक की आधिकारिक वेबसाइट पर मौजूद जानकारी के अनुसार, भारत की तरफ से ओलंपिक में शामिल होने वाली पहली महिला नोरा पॉली हैं, जिन्होंने 1924 में पेरिस ओलंपिक में टेनिस में भारत का प्रतिनिधित्व किया.

आजादी के बाद 1948 के लंदन ओलंपिक में भारतीय दल में एक भी महिला खिलाड़ी नहीं थी लेकिन 1952 के हेलसिंकी ओलंपिक में नीलिमा घोष, मैरी डिस्जुजा, डॉली नाजिर और आरती साहा ने देश का झंडा उठाया.

भारत में खेल और शारीरिक गतिविधि (एसएमएन) में भागीदारी के स्तर में लैंगिक असमानता बढ़ रही है. विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, मौजूदा समय में केवल 43 फीसदी भारतीय महिलाएँ ही सुझाई गई शारीरिक गतिविधियों में शामिल होती हैं. हालांकि, अगर आजकल का रूढ़ान ऐसे ही जारी रहे, तो 2030 तक

यह संख्या घटकर 32 फीसदी रह जाने की संभावना है.

एक नहीं, दो नहीं हजार समस्याएं महिलाओं के लिए खेलों से दूरी घर से ही शुरू हो जाती हैं. ये कहना है डॉ. दिलप्रीत कौर का, जो खुद लंबे समय तक ट्रेक एंड फील्ड एथलीट रही हैं और पुणे की श्री बालाजी यूनिवर्सिटी के स्पोर्ट्स साइंस विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं.

उन्होंने डीडब्ल्यू हिंदी से बात करते हुए बताया, हर खेल की अपनी डिमांड होती है और बेहतर नतीजे हासिल करने के लिए हमें उसके हिसाब से चलना पड़ता है. लेकिन कई बार लड़कियों को सिर्फ इस लिए रोका जाता है क्योंकि उन्हें छोटे कपड़े पहनने पड़ते हैं.

अल्मोड़ा की रहने वाली ज्योति तलवार बताती हैं कि उन्हें खेलने के लिए परिवार की तरफ से हमेशा स्पॉट मिला लेकिन स्कूल में शिक्षकों का साथ नहीं मिलाता था. उनकी टीचर अक्सर कहती थीं कि अगर दो नाचों की सवारी की तो डूबना तय है.

ट्रेक एंड फील्ड में मास्टर डिग्री ले चुकी ज्योति ने न केवल दो नाचों की सवारी की बल्कि उन्हें पार भी लगाया. ज्योति कहती हैं कि स्कूलों में ही अगर सही समय पर प्रतिभा की पहचान कर ली जाए तो भारत को बड़े स्तर पर अच्छे खिलाड़ी मिल सकते हैं.

डॉ. दिलप्रीत कौर खेल के दौरान चोट लगने, कोचिंग और स्पॉन्सरो के अभाव, फंडिंग, मीडिया कवरेज और ह्यूमन परफॉर्मेंस लैब की कमी, जेंडर गैप और असुरिश्कत माहौल को भी बड़ा कारण मानती हैं. उन्होंने बताया कि भारत में जितने स्पोर्ट्स सेंटर हैं, वो फिलहाल काफी नहीं हैं. मौजूदा सेंटों में इतनी



कम जगह है कि ज्यादातर लड़कियों को खेल का खर्च उठाने के लिए परिवार से मदद लेनी पड़ती है. वो कहती हैं, “हम खर्च तब करते हैं जब मेडल आ जाता है. जबकि खर्च मेडल लाने से पहले करना चाहिए.”

स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एसएआई) की वेबसाइट पर मौजूद जानकारी के अनुसार राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र के 24 सेंटों पर महज 1,514 लड़कियां और एसएआई प्रशिक्षण केंद्रों में महज 1,383 लड़कियां हैं.

पीरियड्स भी एक बड़ी वजह

भारत में आमतौर पर पीरियड्स को लेकर जागरूकता का अभाव है और बात खेलों की हो तो तमाम भ्रंतियां मौजूद हैं. पैरा एथलेटिक्स कोच अभिषेक चौधरी भी यही मानते हैं. डीडब्ल्यू हिंदी से बात करते हुए उन्होंने बताया, ट्रेनिंग के दौरान कई बार ऐसा होता है कि हमें शारीरिक क्षमता का ध्यान रखते हुए शेड्यूल बनाना होता है लेकिन कई बार लड़कियां कोच को खुलकर बता नहीं पाती हैं.

वो यह भी कहते हैं कि भारत में ऐसे डॉक्टरों की कमी है जिन्हें खेल से जुड़ी चोटों या अन्य मामलों की

जानकारी हो. उन्होंने कहा, हमारे एथलीट्स को अगर यूरोपीय देशों जैसी आधी सुविधाएं भी मिल जाएं तो हमारी लड़कियां न सिर्फ लड़कों से ज्यादा मेडल लाएंगी बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेहतर स्थान दिलाएंगी.

पेरिस खेल गांव में मौजूद भारत के पैरा कोच अभिषेक चौधरी

पैरा कोच अभिषेक चौधरी खेलों में लड़कियों की सक्रिय भागीदारी के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं

महिला कोच बेहतर या पुरुष कोच इस सवाल का जवाब देते हुए अमीषा रावत ने हमें बताया कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोचिंग एक महिला दे रही है या पुरुष. वो कहती हैं, हमारे देश में वैसे ही कोच की कमी है इसलिए पहले तो कोच मिलना ही बड़ी बात होती है.

अभिषेक भी इस बात से इत्फाक रखते हैं. वो कहते हैं, रूमें कई महिला खिलाड़ियों को प्रशिक्षण देता हूँ. फर्क सिर्फ इससे पड़ता है कि आप अपने खेल को लेकर कितने सीरियस हैं और क्या हासिल करना चाहते हैं.”

स्टेट ऑफ स्पोर्ट्स एंड फिजिकल एक्टिविटी रिपोर्ट (2024) के अनुसार, शारीरिक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी भी है. 40 फीसदी महिलाएँ घरेलू कामों को ही एक शारीरिक गतिविधि के रूप में देखती हैं और 12 फीसदी से कम महिलाएँ ऐसी एक्सरसाइज करती हैं जिससे मांसपेशियां मजबूत होती हैं.

शारीरिक शोषण बड़ी वजह

आरटीआई से मिली जानकारी के अनुसार, दस सालों (2010-2020) के दौरान स्पोर्ट्स अथॉरिटी

ऑफ इंडिया (एसएआई) में यौन उत्पीड़न की 45 शिकायतें दर्ज हुईं, जिनमें से 29 कोचों के खिलाफ थीं. अमरुत्ता का यह भाव महिलाओं को खेलों से दूर करने का एक कारण बनता है.

यौन उत्पीड़न को लेकर भारतीय कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष बृज भूषण शरण सिंह के खिलाफ देश के पहलवानों का प्रदर्शन चर्चा में रहा था. एसएआई की वेबसाइट पर मौजूद जानकारी के अनुसार, संसदीय कार्य मंत्रालय की तरफ से नॉमिनेट किए जाने वाले तीन संसद सदस्यों में से एक नाम बृज भूषण शरण सिंह का भी है.

कैसे सुधरेंगे हालात

सरकार की 'खेलो इंडिया' जैसी पहले और विभिन्न राज्यों में महिला खेल अकादमियों का विकास महिला एथलीटों को अवसर प्रदान कर रहे हैं. पेरिस ओलंपिक में महिला खिलाड़ियों की भागीदारी भी लगभग 40 फीसदी तक पहुंच गई है और विभिन्न महिला लोगों में महिलाएँ सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं लेकिन फिर भी काफी काम किया जाना बाकी है.

आजादी के बाद से भारत में खेलों में महिलाओं की भागीदारी ने एक लंबा सफर तय किया है. पीटी उषा, कर्णम मल्लेश्वरी, साइना नेहवाल, एमसी मैरी कॉम, पीवी सिंधु, मोरारबाई चानू, मनु भाकर जैसी कई लड़कियों ने देश को गौरवान्वित किया है और लाखों बच्चियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनी हैं.

अभिषेक चौधरी कहते हैं कि खेलों में मौजूद भ्रष्टाचार, मूलभूत सुविधाओं की कमी, ट्रेनिंग और सजो-सामान की कमी, बेहतर मेडिकल सुविधाओं और अच्छी नीयत के बिना लड़कियों को आगे ले जाने का लक्ष्य हासिल नहीं किया जा सकता.

अजनाला और रमदास के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में 28 स्थानों पर लगे मेडिकल कैम्प

अमृतसर, 6 सितम्बर (साहिल बेरी)

डिप्टी कमिश्नर अमृतसर श्रीमती साक्षी साहनी के निर्देश पर बाढ़ प्रभावित इलाकों में पानी भर जाने के कारण फेलने वाली बीमारियों और खतरों को ध्यान में रखते हुए बड़े स्तर पर मेडिकल कैम्प आयोजित किए गए। इसी कड़ी में आज डॉक्टरों की टीम नावों, ट्रैक्टरों और अन्य साधनों से उन स्थानों तक पहुँची जहाँ लोग रह रहे थे। इन टीमों में स्वास्थ्य विभाग, गायक जसबीर जस्सी, एम्स और गैर-सरकारी संगठनों ने महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

इस संबंध में जानकारी देते हुए अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर श्री रोहित गुप्ता ने बताया कि आज स्वास्थ्य विभाग की ओर से अजनाला और रमदास में 22 स्थानों पर तथा गैर-सरकारी संगठनों की ओर से 6 स्थानों पर मेडिकल कैम्प लगाए गए। इनमें



लगभग 6800 मरीज पहुँचे, जिनका परीक्षण कर दवाइयाँ दी गईं और उपचार किया गया। उन्होंने बताया कि इसके अतिरिक्त पंजाब के प्रसिद्ध गायक जसबीर जस्सी ने अपने प्रयासों से 22 विशेषज्ञ डॉक्टरों को विशेष रूप से बाढ़ राहत क्षेत्र के लिए बुलाया, जो सिविल अस्पताल अजनाला में बैठकर लोगों का इलाज करते रहे। एम्स के डॉक्टरों ने भी किसान जयदेवियों के साथ मिलकर कैम्प लगाए।

उन्होंने कहा कि प्राकृतिक आपदा से हुआ नुकसान तो कम नहीं किया जा सकता, लेकिन अब हमारी कोशिश है कि पानी या अन्य कारणों से कोई बीमारी फैलकर जिलेवासियों के लिए खतरा न बने। इसी दौरान उन्होंने बताया कि कल तलवंडी राय दादू में 8 वर्षीय बच्चे अभिजित सिंह को किडनी की समस्या पाई गई, जिसे स्वास्थ्य विभाग ने वहाँ से निकालकर गुरु नानक देव अस्पताल के बच्चा वार्ड में भर्ती कराया है।

इस बच्चे का उपचार वहाँ चल रहा है और इलाज का सारा खर्च यथासंभव पंजाब सरकार द्वारा वहन किया जाएगा। श्री गुप्ता ने लोगों से यह भी अपील की कि वे हमारे बाढ़ राहत कैम्पों में 24 घंटे उपलब्ध डॉक्टरों की सेवाएँ किसी भी आपात स्थिति में ले सकते हैं। विशेषकर जब किसी को साँप ने काट लिया हो तो तुरंत वहाँ पहुँचकर उसका टीकाकरण करवाया जा सकता है।

हड़ से प्रभावित सरकारी स्कूलों का जिला शिक्षा अधिकारियों ने किया निरीक्षण हड़ से अधिकतर सरकारी स्कूलों का बुनियादी ढांचा प्रभावित – डी.ई.ओ.

अमृतसर, 6 सितम्बर (साहिल बेरी)

— बीते दिनों रावी दरिया और सक्की नाले में आए भारी पानी के कारण बनी हड़ की स्थिति से जिला अमृतसर के सीमावर्ती क्षेत्रों के अधिकांश सरकारी स्कूलों को भारी नुकसान पहुँचा है।

इस संबंध में तहसील अजनाला के शिक्षा ब्लॉक अजनाला-2 और चोगावां-2 के अंतर्गत आने वाले हड़ प्रभावित सरकारी स्कूलों का दौरा करने और हुए नुकसान का जायजा लेने के लिए जिला शिक्षा विभाग अमृतसर की टीम मौके पर पहुँची। इस टीम में श्री राजेश कुमार शर्मा, जिला शिक्षा अधिकारी (सेकेंडरी) अमृतसर, श्री कवलजीत सिंह, जिला शिक्षा अधिकारी (एलीमेंट्री) अमृतसर, श्री राजेश खन्ना, डिप्टी डी.ई.ओ., श्री राजपाल सिंह, वरिष्ठ सहायक अजनाला-2, परविंदर सिंह सरपंच जिला मीडिया कोऑर्डिनेटर, राजकुमार कंप्यूटर अध्यापक चमियारी आदि शामिल थे।

टीम ने हड़ से प्रभावित सरकारी प्राथमिक विद्यालय हरद खुर्द, कोटली अंब, गुजरपुरा, तलवंडी राय दादू, चक ओल, डबर, पूंगा, जसरोर, भिंडी सैदा, कोट सिद्धू, कड़ियाल,



सरकारी मिडिल स्कूल कोटली अंब, तलवंडी राय दादू, शाहपुर, सरकारी हाई स्कूल कड़ियाल, सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल भिंडी सैदा, ओठियां का दौरा किया और वहाँ हुए नुकसान का निरीक्षण किया। मुख्यालय अमृतसर में पत्रकारों से बातचीत करते हुए श्री राजेश कुमार शर्मा (डी.ई.ओ. सेकेंडरी), कवलजीत सिंह (डी.ई.ओ. एलीमेंट्री) और राजेश खन्ना

(डिप्टी डी.ई.ओ.) ने बताया कि हड़ के कारण अजनाला और लोपुके तहसील के अंतर्गत सरकारी स्कूलों का बुनियादी ढांचा बुरी तरह प्रभावित हुआ है। हड़ की वजह से जहाँ स्कूल भवनों को भारी नुकसान पहुँचा है, वहीं स्कूल परिसरों में साँपों और अन्य जहरीले जीवों के मृत पाए जाने की भी घटनाएँ सामने आईं। इस मौके पर उनके साथ मुख्य अध्यापक सरफराज सिंह कोटली, राजकुमार

(कंप्यूटर अध्यापक, चमियारी), तनवीर सिंह (लेखाकार), मनजिंदर सिंह समेत अन्य शिक्षा अधिकारी और कर्मचारी भी मौजूद थे। तस्वीर कैप्शन: हड़ से प्रभावित विभिन्न सरकारी स्कूलों की जमीनी हकीकत का जायजा लेते हुए श्री राजेश कुमार शर्मा (डी.ई.ओ.), कवलजीत सिंह (डी.ओ.), राजेश खन्ना (डिप्टी डी.ई.ओ.) एवं अन्य।

झारखंड के कोडरमा स्टेशन में खड़ी मालगाड़ी में गिरा पुरानी फुट ओवर ब्रिज

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, झारखंड के कोडरमा रेलवे स्टेशन पर शनिवार को उस वक्त एक बड़ी हादसा होने से टल गया जब यहाँ बने पुराने फुट ओवर ब्रिज को हटाने के दौरान वह नीचे पटरी पर खड़ी मालगाड़ी पर जा गिरा। शाम करीब चार बजे हुए इस हादसे के बाद स्टेशन पर अफरा-तफरी मच गई। हालाँकि गंभीरतम यह रहा कि इस हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ और ना ही कोई इसकी चपेट में आया। प्राप्त जानकारी के अनुसार यह दुर्घटना कोडरमा स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर सात पर हुई।

दरअसल अमृत भारत योजना के तहत प्रदेश के कोडरमा रेलवे स्टेशन को भी अपग्रेड किया जा रहा है। इसी अपग्रेडेशन के चलते शनिवार को स्टेशन पर एक प्लेटफॉर्म से दूसरे प्लेटफॉर्म पर जाने के लिए बने पुराने पैदल ब्रिज को खोलकर हटाया जा रहा था, तभी क्रैन की केबल टूट गई। रस्सी के टूटते ही पैदल पुल का खुला हुआ हिस्सा नीचे गिर गया। इस दौरान पटरी पर



मालगाड़ी खड़ी हुई थी, जिससे कि ब्रिज का हिस्सा उस पर गिर पड़ा। हालाँकि अच्छी बात यह रही कि दुर्घटना के वक्त नीचे कोई पैसंजर ट्रेन नहीं थी, वरना कई लोग इसकी चपेट में आ सकते थे।

बीजू बाबू ने उद्योग शुरू किया, लेकिन नवीन बाबू ने इसे बंद कर दिया : मुख्यमंत्री मोहन माझी

मनोरंजन सासमल, वरिष्ठ पत्रकार

भुवनेश्वर: मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने पूर्व मुख्यमंत्री नवीन पटनायक पर निशाना साधा है। वहीं, मुख्यमंत्री ने उनके पिता बीजू पटनायक की तारीफ की है। मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने कहा, बीजू पटनायक ने कपड़ा उद्योग, कताई मिलें, मिग आयरन और चीनी उद्योग शुरू किया, लेकिन नवीन बाबू ने उन सभी को बंद कर दिया। मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने कहा, रबीजू पटनायक ने कपड़ा उद्योग, कताई मिल, लोहा उद्योग, चीनी उद्योग शुरू किया, लेकिन नवीन बाबू ने इन सबको बंद कर दिया। हमारी सरकार ने फिर से औद्योगीकरण को महत्व दिया है। नवीन पटनायक बहुत सी बातें भूल गए हैं। इसीलिए ओडिशा के लोग दूसरे राज्यों में चले गए हैं।



जेएलकेएम पार्टी से निशा भगत छह वर्ष के लिए निष्कासित

निशा ने भी अपना पक्ष रखा कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, कुर्मी समाज को आदिवासी का दर्जा दिए जाने की आपत्ति पर बयान सार्वजनिक होने के बाद निशा भगत को जयराम महतो ने अपनी पार्टी जेएलकेएम (झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा) से निष्कासित कर दिया है। प्रासंगिक मामले पर जयराम की पार्टी ने अनुशासनात्मक कार्रवाई की है। निशा भगत गुमला से पार्टी की पूर्व प्रत्याशी रही हैं। उन्हें पार्टी ने सभी पदों और जिम्मेदारियों से तत्काल प्रभाव से मुक्त कर दिया है। साथ ही, अगले छह वर्षों तक उन्हें पार्टी की किसी भी गतिविधि, पद या दायित्व में भाग लेने से प्रतिबंधित अपनी चिट्ठी में बताया गया है।

पार्टी ने आदेश जारी कर कहा है कि संगठन का मूल उद्देश्य सभी समाज, लिंग, संप्रदाय, धर्म और जातियों के समानता और समानता की रक्षा करना है। लेकिन हाल ही में निशा भगत द्वारा कुड़मी समुदाय के संबंध में दिए गए भ्रामक और अनुचित बयान की जानकारी विभिन्न मीडिया और सोशल मीडिया चैनलों से मिली जिसके उपरांत पार्टी मुखिया तथा विधायक जयराम की पार्टी ने यह कार्रवाई की है।



निशा भगत ने पार्टी से निकाले जाने पर सोशल मीडिया में दिए अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि मैं ईसाई समुदाय के बारे में बोली तो जेएलकेएम को मिर्ची नहीं लगी, कुर्मी समुदाय के लिए बोली तो बवाल कर रहे हैं। निशा भगत ने कहा कि कुर्मी समुदाय किसी कीमत पर आदिवासी हितैषी नहीं हो सकते। पार्टी पहले छोड़ती तो कुर्मियों की मानसिकता का पता नहीं चलता। उम्मीद करती हूँ कि सबको जयराम महतो की मानसिकता का पता चल गया होगा।

निशा भगत ने जयराम महतो और उनकी पार्टी की तीखी आलोचना करते हुए कहा कि जयराम महतो के अंदर सभी धर्मों के लोगों को साथ लेकर चलने की हैसियत नहीं है। आपको बता दे कि निशा भगत ने एक यूट्यूब चैनल को दिए इंटरव्यू में कहा था कि मेरे जीते जे कुर्मी समाज को कभी आदिवासी नहीं बनने दूंगी। आदिवासी पैदा होना पड़ता है, बना नहीं जाता।

झारखण्ड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा

जयदाम कुमार महतो

अध्यक्ष जयरा - JKJM

पत्रकार जयरा - JKJM/CP/16/25

दिनांक 06/09/2025

श्रीमती निशा भगत, पूर्व जयरात्री, मुम्बई।

विषय - कुर्मी समुदाय के संबंध में अनुचित एवं अपमानजनक बयान देने की कारण अनुशासनात्मक कार्रवाई।

संज्ञित - यह आदेश द्वारा सुचित किया जाता है कि हमारी पार्टी का मूल उद्देश्य सभी समाज, लिंग, संप्रदाय, धर्म एवं जातियों के समानता और समानता की रक्षा करना है। निशा भगत ने जेएलकेएम को मिर्ची नहीं लगी, कुर्मी समुदाय के लिए बोली तो बवाल कर रहे हैं। निशा भगत ने कहा कि कुर्मी समुदाय किसी कीमत पर आदिवासी हितैषी नहीं हो सकते। पार्टी पहले छोड़ती तो कुर्मियों की मानसिकता का पता नहीं चलता। उम्मीद करती हूँ कि सबको जयराम महतो की मानसिकता का पता चल गया होगा।

संज्ञित - यह आदेश जारी कर कहा है कि संगठन का मूल उद्देश्य सभी समाज, लिंग, संप्रदाय, धर्म और जातियों के समानता और समानता की रक्षा करना है। लेकिन हाल ही में निशा भगत द्वारा कुड़मी समुदाय के संबंध में दिए गए भ्रामक और अनुचित बयान की जानकारी विभिन्न मीडिया और सोशल मीडिया चैनलों से मिली जिसके उपरांत पार्टी मुखिया तथा विधायक जयराम की पार्टी ने यह कार्रवाई की है।

अतिरिक्त - जिला पंचायतियारी एवं प्रखंड पंचायतियारी।

भारतीय

(जयराम कुमार महतो)

33-अमरी विधायक वरिष्ठ क्रांतिकारी अध्यक्ष झारखण्ड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा।

संपर्क - 9822424242

www.jkjmparty.org

हड़ प्रभावितों के पुनर्वास में आगे आई संस्थाएं - सर्विस वलब, विश्वास फाउंडेशन, जय हो वलब और पंजाब नेशनल बैंक एसोसिएशन का बड़ा योगदान

अमृतसर, (साहिल बेरी)

हड़ प्रभावितों को राहत प्रदान करने और उनके पुनर्वास के लिए जिला प्रशासन का साथ देने हेतु नामी संस्थाएं, दानवी व्यक्ति, एसोसिएशन और समाजसेवी लगातार आगे आ रहे हैं।

श्री सुखदेव सिंह छीना, आईपीएस, अध्यक्ष द सर्विस वलब अमृतसर और उनकी प्रबंधक टीम ने कैम्प ऑफिस अजनाला में डिप्टी कमिश्नर अमृतसर सोसाइटी अमृतसर के माध्यम से 2 लाख रुपये का चेक सौंपा। इसके अलावा, पहले दान किए गए 1 लाख रुपये के चेक भी दिए गए। उन्होंने कहा कि भविष्य में आपदाओं से निपटने के लिए आवश्यक अन्य सेवाओं के लिए सर्विस वलब हमेशा तैयार रहेगा।

ऑल इंडिया पंजाब नेशनल बैंक ऑफिसर एसोसिएशन की ओर से अडिस्ट्रेट जनरल सेक्रेटरी श्री राजीव अरोड़ा और अध्यक्ष नकुल शर्मा ने 1,51,000 रुपये का चेक रेडक्रॉस सोसाइटी के लिए डिप्टी कमिश्नर को भेंट किया। वहीं पंजाब नेशनल बैंक अमृतसर



के समस्त स्टाफ और मैनेजमेंट की ओर से श्री कृष्ण कुमार (सर्कल हेड) और श्री हिम्मत (डिप्टी सर्कल हेड) द्वारा 2.5 लाख रुपये का चेक सौंपा गया। उन्होंने कहा कि आगे भी जनता की सेवा के लिए डिप्टी कमिश्नर द्वारा जो भी ड्यूटी लगाई जाएगी, उसे निभाया जाएगा।

इसी दौरान जय हो क्लब अमृतसर के अध्यक्ष श्री विष्णु दत्ता द्वारा हड़ प्रभावित 50 परिवारों के लिए घर का आवश्यक सामान जैसे सिलेंडर, चूल्हा, खाट, बिस्तर, धरतू, बर्तन और गंदे डिप्टी कमिश्नर श्रीमती साक्षी साहनी की अगुवाई में वितरित किए गए। इसी प्रकार आज विश्वास फाउंडेशन

पंचकूला की ओर से साध्वी निलमा विश्वास, सचिव ऋषि विश्वास, सुशील टोक और रमेश सुमन द्वारा प्रभावित इलाकों में वितरण हेतु 2000 बेडशीट, 2500 सैनिटरी पैट, 500 तिरपाल और 400 बैग कैडल फोड डिप्टी कमिश्नर को भेंट किए गए। इस अवसर पर डिप्टी कमिश्नर श्रीमती साक्षी साहनी ने इस बहुमूल्य योगदान के लिए सभी संस्थाओं का धन्यवाद करते हुए कहा कि आपके सहयोग से हम बहुत जल्द इस संकट से बाहर निकलेंगे। इस मौके पर अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर श्री रोहित गुप्ता, डीएम मार्कफेड मन्दिर पाल सिंह और अन्य अधिकारी भी उपस्थित रहे।

पंजाब नेशनल बैंक रंजीत एवेन्यू ब्रांच के डीजीएम कृष्ण कुमार के नेतृत्व में पंजाब नेशनल बैंक की टीम ने बाढ़ प्रभावित परिवारों के साथ एकजुटता दिखाते हुए राहत सामग्री भेजी है। खास बात यह है कि यह सहायता बैंक के कर्मचारियों द्वारा अपनी निजी कमाई से एकत्रित धनराशि से प्रदान की गई है।

अमृतसर 6 सितंबर (साहिल बेरी)

बैंक अधिकारियों ने बताया कि बाढ़ से प्रभावित लोगों की पीड़ा कम करने के लिए हर संस्था और व्यक्ति को अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। इस प्रयास से न केवल पीड़ित परिवारों को तात्कालिक सहायता मिलेगी बल्कि समाज में एकता और भाईचारे का संदेश भी पहुंचेगा। टीम ने विश्वास दिलाया कि आने वाले समय में भी जरूरत पड़ने पर इस तरह की सहायता जारी रहेगी। इस अवसर पर डीजीएम कृष्ण कुमार, पंजाब नेशनल बैंक अधिकारी जसमीत सिंह गिल, अंकित नैयर (क्षेत्रीय सचिव, पीएनबी स्टाफ यूनिशन पंजाब), नकुल शर्मा, हरप्रीत गुग्गानी, भगवान सिंह गिल और मनदीप सिंह मौजूद रहे।



ओडिशा विधानसभा के पुराने अतिथि गृह के विस्तारित भवन का शिलान्यास

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर: ओडिशा विधानसभा की इकाई संख्या 4 में पुराने अतिथि गृह के विस्तारित भवन का शिलान्यास किया गया। अध्यक्ष श्रीमती सुरमा पाद्री ने उपाध्यक्ष श्री भवानी शंकर भोई की उपस्थिति में इसका शिलान्यास किया। इस अवसर पर विधानसभा सचिव श्री सत्यव्रत राउत भी उपस्थित थे।

गौरतलब है कि पुराने अतिथि गृह में 23 कमरे तो हैं, लेकिन अब जागह की कमी की समस्या है। इसके लिए 3 करोड़ 8 लाख रुपये से अधिक की लागत से विस्तारित भवन का निर्माण कार्य शुरू किया जाएगा। इस तीन मंजिला भवन में कुल 16 कमरे बनाए जाने हैं, जिन्हें एक भवन आवरण से जोड़ा जाएगा। निर्माण कार्य कुल 9,000 वर्ग फुट से अधिक क्षेत्र में किया जाएगा और परियोजना के 31 मार्च, 2026 तक पूरा होने की उम्मीद है।



इससे कमरों की कुल संख्या बढ़कर 39 हो जाएगी। वहीं, विधानसभा के ओएमसी कार्यालय के सामने बने नए गेस्ट हाउस में 18 कमरे हैं, जबकि नए और पुराने कमरों को मिलाकर कमरों की संख्या 57 हो जाएगी। अब इस गेस्ट हाउस के लिए ऑनलाइन बुकिंग की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी और 24 घंटे सुरक्षा

व्यवस्था को और भी बेहतर बनाया जाएगा। इससे इन गेस्ट हाउस में ठहरना पूरी तरह सुरक्षित और आरामदायक हो जाएगा। इससे भुवनेश्वर आने वाले पूर्व विधायक इन गेस्ट हाउस में सुविधापूर्वक ठहर सकेंगे। इस अवसर पर विधानसभा के वरिष्ठ अधिकारी प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

रांची - पुरुलिया रोड, सदर अस्पताल मार्ग व परिसर मीड़ मुक्त रखें : झारखंड हाईकोर्ट

अदालत ने माना कि राज्य, भारत के संविधान के गारंटीकृत अपने निवासियों के जीवन और स्वतंत्रता के लिए जिम्मेदार है।

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, राजधानी में भारी ट्रैफिक के कारण सदैव खराब खबर भी भेड़ से आम जनता से लेकर बीमार लोगों को अस्पताल तक ले जाने लाने में काफी कठिनाई होती है। रांची के पुरुलिया रोड को जाम मुक्त करने और इस रोड पर आंदोलन को पार्किंग न हो, यह सुनिश्चित करने का निर्देश हाईकोर्ट ने दिया है। स्वतंत्रज्ञान लिफ्ट मामले की सुनवाई करते हुए चीफ जस्टिस तरलोक सिंह चौहान और जस्टिस राजेश शंकर की अदालत ने यह निर्देश दिया है। कोर्ट ने सिविल सर्जन को सदर अस्पताल परिसर के अंदर वाहनों की उचित पार्किंग की व्यवस्था करने का निर्देश देते हुए अस्पताल परिसर के अंदर की पार्किंग के लिए उन्हें जिम्मेवार भी ठहराया है। सदर अस्पताल के गेट के पास जाम से एक गर्भवती महिला के अस्पताल ले जाने में हुई परेशानी के मामले पर हाईकोर्ट ने संज्ञान लिया था। कोर्ट ने ट्रैफिक एसपी और सिविल सर्जन को एंबुलेंस और गंभीर रोगियों को ले जाने वाले वाहनों के सुगम प्रवेश सुनिश्चित करने के तत्काल कदम उठाने का भी निर्देश दिया है। आठ



अगस्त को प्रसव पीड़ा में उस महिला को शहर के बाहरी इलाके बजरा से एंबुलेंस में लाया गया था। सर्जना चौक से सदर अस्पताल के मुख्य द्वार तक मेन रोड पर जाम में खड़ा रहना पड़ा था। अस्पताल के अंदर भी वाहन अव्यवस्थित तरीके से खड़े थे, जिससे एंबुलेंस इमरजेंसी तक नहीं पहुंच सकी थी। एंबुलेंस चालक ने गेट पर वाहन रोककर व्हीलचेयर लाने के लिए दौड़ लगाई। इस दौरान मरीज ने सहिया और अपने पति के साथ धीरे-धीरे गंभीर रोगियों को ले जाने वाले वाहनों के सुगम प्रवेश सुनिश्चित करने के तत्काल कदम उठाने का भी निर्देश दिया है। आठ

गंभीरता से लेते हुए यातायात पुलिस और सदर अस्पताल को नोटिस जारी किया। कोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि अपने-अपने हलफनामों में पुलिस और अस्पताल प्रशासन ने एक-दूसरे को दोषी ठहराने का प्रयास किया और अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारियों से परेला झाड़ लिया। अदालत ने माना कि राज्य, भारत के संविधान के गारंटीकृत अपने निवासियों के जीवन और स्वतंत्रता के लिए जिम्मेदार है। जीवन के अधिकार में चिकित्सा सहायता और सुविधा का अधिकार भी शामिल है, जिसे राज्य अपने नागरिकों को उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध हो।